Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

मूर्ख

खोटो नांणो ने सांतरों,
एकण नोली मांय।
ते भोला रे हाथे दियां,
त्यांसूं जुआ किया किम जाय।।

खोटा और खरा सिक्का एक ही नोली में है। क्या भोला आदमी उन्हें अलग-अलग कर सकता है?

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 46 • 23 - 29 अगस्त, 2021 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 21-08-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

महासभा प्रतिनिधि सम्मेलन का शुभारंभ

तेरापंथ धर्मसंघ की संस्थाएँ समाज का सौभाग्य है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १४ अगस्त, २०२१

अमृत पुरुष, महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने इस सूत्र में ठाणं के नौवें स्थान के ४२वें सूत्र में प्रायश्चित के नौ प्रकार बताए गए हैं। पायच्छिते यानी पाप का छेदन करने वाला है, वो प्रायश्चित होता है।

तपस्या और जीव का योग होता है, तो प्रायश्चित शुद्धि हो जाती है। आदमी को गलती, अपराध, दोष हो सकता है। ऐसे लोग कितने मिलेंगे, जिनसे कभी गलती नहीं होती होगी? वीतराग प्रभु की बात अलग है।

छठे गुणस्थान तक के मनुष्यों से तो गलती हो सकती है। साधु संस्था में रहने वाले चारित्रात्माएँ हैं, उनसे भी गलती प्रतिसेवना, अपराध दोष में हो सकते हैं। सर्व सावद्य-योग का त्याग है, फिर भी भीतर में राग भी है, द्वेष भी हो जाता है, तो फिर गलतियाँ भी हो सकती हैं।

दोष लगे ही नहीं, ये तो होना मुश्किल है। छोटे-मोटे दोष लग सकते हैं। ऐसी स्थिति में उपाय है–प्रायश्चित। आदमी बाहर जाता है, तो पैर गंदे हो सकते हैं। स्थान पर आकर पैर को साफ कर लिया तो गंदगी साफ, अगर वो गंदगी साफ नहीं करेगा, ऐसे ही बैठा रहेगा तो कपड़े गंदे हो सकते हैं। वस्त्र को धो लेना, उसके मैल को उतारने का उपाय है। (शेष पृष्ठ २ पर)

अमृत पुरुष, महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महासभा प्रतिनिधि सम्मेलन के शुभारंभ पर पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि संस्कृत शब्द कोष में दो शब्द हैं–समज और समाज। पशुओं का समुह समज कहलाता है। मनुष्य का समुह समाज कहलाता है। समाज अनेक व्यक्तियों का समुह होता है। समाज होता है, वहाँ कुछ आश्वासन भी मिल सकता है। सहयोग और त्राण मिल सकता है। समस्या का समाधान भी मिल सकता है।

तेरापंथी महासभा तेरापंथ समाज की एक प्रतिनिधि सभा है। बड़ा दायित्व है, महासभा का। दायित्व का निर्वहन भी अच्छे ढंग से हो रहा है, ऐसा मुझे लग रहा है। तेरापंथ समाज में आज जो संस्थाएँ हैं, कभी मेरे मन में आया कि थुथकार डालें ऐसी संस्थाएँ हैं। इतनी बढ़िया संस्थाएँ हैं, एक-एक संस्था का नाम ले लो। कितनी उनकी अच्छी गतिविधियाँ हैं।

गुरुकुलवास की गृहस्थों की व्यवस्था को देखूँ तो कितना विकसित व्यवस्था तंत्र चल रहा है। कितनी यात्रा, कितनी व्यवस्थाएँ करती हैं। सब व्यवस्थाएँ तैयार हैं। संस्थाओं में जागरूकता-सजगता है। तेरापंथ समाज के पास आज जो संस्थाएँ हैं, मानो समाज कोई भाग्य है। पुण्य का योग है। कोई काम देने वाला चाहिए, काम करने वाले तैयार बैठे हैं।

बढ़िया संस्थाएँ, बढ़िया कार्यकर्ता और बढ़िया गतिविधियाँ हैं। कमियाँ बता सकूँ, वो भी मेरे ध्यान में नहीं आ रही है। समीक्षा तो होती रहनी चाहिए। निर्णय के साथ क्रियान्विति भी होती है। यह बड़ी सुंदर बात है। कल्याण परिषद के सदस्य जागरूक हैं। महासभा संस्था शिरोमणी है।

स्थानीय तेरापंथी सभाएँ भी जुड़ी हुई हैं। स्थानीय स्तर पर वो कार्य करती हैं। तेरापंथ समाज नाम दिया वो बढ़िया चिंतन है। व्यापक स्तर पर काम हो सकेगा। यह उदार चित्तता है। तेरापंथी समाज नाम आ गया तो सारी संस्थाएँ जुड़ गई। इसमें त्याग की भावना है, सामुदायिक चेतना की भावना है। व्यापक कार्यों में समाज का नाम हो।

ज्ञानशाला का भी अच्छा उपक्रम चल रहा है। और जितना विकास हो सके प्रयास हो।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि मैं महासभा प्रतिनिधि सम्मेलन को दो रूपों में देखती हूँ। उसका एक रूप है–दर्पण का और दूसरा रूप है–कैनवास का। दर्पण में सब कुछ दिखाई देता है, वर्ष भर का लेखा-जोखा सामने आ जाता है। क्या किया, क्या नहीं किया, क्या कर सकते थे, पर नहीं किया। दूसरा रूप है कि अग्रिम वर्ष के लिए भावी योजनाएँ बनाना। जैसे एक चित्रकार कैनवास पर पहले रेखाचित्र अंकित करता है, फिर चित्र बनाता है। कौन-सा कार्य अग्रिम पंक्ति में रखकर करना है। हर कार्यकर्ता का दायित्व है कि वह अपना कृतत्व समाजमुखी बनाएँ।

अकिंचन अपरिग्रही साधु को देवता भी नमस्कार करते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १३ अगस्त, २०२१

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु को साधना करनी है। साधना का साधन शरीर है। साधना करनी है, तो शरीर को रखना अपेक्षित है। शरीर को रखना अपेक्षित है, तो भोजन करना भी अपेक्षित है। भोजन करना है, तो भोजन की व्यवस्था का होना भी अपेक्षित है।

प्रश्न होता है, शरीर को भोजन दें ही क्यों? क्यों टिकाए रखें शरीर को? दीक्षा ली और साथ में चौविहार संथारा भी ले लें फिर न गोचरी जाना, न आहार लाना। काम सिद्ध हो जाए। कभी-कभी यह रास्ता भी काम में लिया जाता है। परंतु यह रास्ता सर्वाग्रंथि नहीं लगता।

दीक्षा और संथारा साथ होगा तो फिर साधुपन का कालमान सीमित हो जाएगा। लंबा साधुपन होगा तो वह निर्जरा और सेवा कर जाएगा। प्रायः दीक्षा और संथारा साथ नहीं होते। शरीर को भोजन दिया जाता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

✦ अभय की साधना करने वाला सुखी बन सकता है। भय और तनाव दुःख पैदा करता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

राग से विराग की ओर ले जाने वाले ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ११ अगस्त, २०२१

जन-जन के उद्धारक, आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में ज्ञान का बड़ा महत्त्व है। ज्ञान अपने आपमें एक शुद्ध तत्त्व होता है। ज्ञान का मतलब है, ज्ञानावरणीय कर्म के विलय से होने वाला तत्त्व।

ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय हो गया तो फिर केवलज्ञान हो गया, कोई ज्ञान अवशेष ही नहीं रहा। बात है, क्षयोपशम की। क्षयोपशम चार कर्मों का होता है—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय। शेष चार कर्म जो अघाती हैं, उनका क्षयोपशम नहीं होता।

प्रश्न पैदा होता है, क्षयोपशम चार का ही क्यों होता है, शेष चार का क्षयोपशम क्यों नहीं होता? यहाँ ऐसा प्रतीत होता है, क्षयोपशम होने से कुछ उपलब्धि होती है। यह एक बाजोट और धूलि के प्रसंग से समझाया कि धूल उड़ने से बाजेट के कोने दिखाई देने लग जाते हैं। यह बात ज्ञानावरणीय कर्म के संदर्भ में कही गई है। चार कोने प्रथम चार ज्ञान हैं। पूरा बाजोट दिखने लग गया, यह केवलज्ञान के समान हो जाता है।

इस तरह ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से मति, श्रुत अवधि और मनःपर्यव ज्ञान हो सकता है। जब ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है, तो सारा ज्ञान एकाकार हो जाता है, केवलज्ञान हो जाता है। इसी प्रकार दर्शनावरणीय कर्म का क्षयोपशम हुआ तो कुछ अंशों में उपलब्धि हो गई। इसी प्रकार मोहनीय और अंतराय कर्म का होता है।

ये चार घाती कर्म ज्यों-ज्यों हल्के पड़ते हैं, त्यों-त्यों कुछ उपलब्धि होती है। कारण गुण तो हमारे भीतर हैं ही। बाजोट की तरह ज्यों-ज्यों कर्मों का आवरण हटता है, तो मूल चीज प्रकट होती चली जाती है। जहाँ उपलब्धि नहीं होती है, वहाँ क्षयोपशम नहीं होता है। बादल हटेंगे तो सूर्य दिखाई देने लगेगा। घाति कर्म आवरण है। अघाती कर्मों का उदय होता है या क्षय होता है। उपशम केवल मोहनीय कर्म का होता है। उदय, क्षय और पारिणायिक भाव तो आठों ही कर्मों का होता है।

यहाँ ठाणं आगम के २७वें सूत्र में बताया गया है कि पापश्रुत-प्रसंग नौ प्रकार के होते हैं। ज्ञान अपने आपमें इस रूप में निर्मल है। अच्छी या बुरी चीज का ज्ञान अपने आपमें खराब नहीं है। नौ तत्त्वों में आदरवा जोग, छोड़वा जोग, जाणवा जोग। जाणवा जोग यानि ज्ञेय तो पाप-आश्रव भी है। ज्ञेय नौ ही तत्त्व है, पर उपादेय नहीं है। हेय भी सब नहीं है। ज्ञेय सब तत्त्व हैं।

संवर, निर्जरा और मोक्ष उपादेय है? जान तो लिया पर हेय क्या और उपादेय क्या? यहाँ गड़बड़ न हो। हेय को ग्रहण न करें। उपादेय को छोड़ें नहीं। विपरीत प्रयास न हो। ज्ञान होता तो निर्मल है, पर कौन-सा ग्रंथ पढ़ना, इसमें विवेक होना चाहिए।

पाप श्रुत प्रसंग यानी कौन से ग्रंथ नहीं पढ़ने चाहिए वे हैं—(१) उत्पात-प्रकृति विप्लव और राष्ट्र विप्लव का सूचक शास्त्र। (२) निमित्त—अतीत वर्तमान और भविष्य को जानने का शास्त्र। (३) मंत्र—मंत्र विद्या का प्रतिपादक शास्त्र। (४) आख्यायिका-मातंग विद्या, एक विद्या जिससे अतीत आदि की परोक्ष बातें जानी जा सकती हैं। (५) चिकित्सा-आयुर्वेद आदि। (६) कला-७२ कलाओं का प्रतिपादक शास्त्र। (७) आवरण-वास्तु विद्या। (८) अज्ञान—लौकिक श्रुत, भरत नाट्य आदि। (९) मिथ्या प्रवचन—कुतीर्थिकों के शास्त्र।

ग्रंथों का अपना-अपना महत्त्व है। संदर्भ देखना चाहिए कि किसके लिए ये अपठनीय हैं। किसके लिए उपयोगी हैं। साधु को तो धार्मिक शास्त्र पढ़ने चाहिए। जहाँ सावद्य क्रिया का प्रतिबोध है, वहाँ पाप कर्म बंध हो सकता है। ऐसा ज्ञान करो जिससे तुम राग से विराग की ओर आगे बढ़ सकते हो, श्रेयों—कल्याणों में तुम्हारी अनुरक्ति पुष्ट हो जाए। जिससे प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भाव से तुम्हारी चेतना सुभाषित-सुभावित हो जाए। जिससे तत्त्वों का ज्ञान होता है, ऐसा ज्ञान करो।

पाप श्रुत प्रसंग एक दृष्टि प्रदान करने वाला सूत्र है। जो अध्यात्म के अभाव से युक्त है, वे पाप श्रुत की कोटी में आ सकते हैं। साधुओं को इनको पढ़ने से बचना चाहिए। जहाँ लगे उपयोगी है, तो पढ़ा भी जा सकता है। ग्रंथ हाथ पकड़कर किसी के पाप नहीं लगा सकता। तीन शब्द हैं—सदुपयोग, अनुपयोग और दुरुपयोग। जो सदुपयोगी हो वो ही पढ़ें। दुरुपयोग को न पढ़ें। इन सबका अंकन कर ग्रंथ पढ़ा जाए तो अच्छी बात हो सकती है।

माणक महिमा की व्याख्या करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि गण को नए आचार्य मिल गए हैं। माणक गणी का पट्टोत्सव चैत्र कृष्णा अष्टमी को आयोजित किया गया। हर्ष से उत्सव आयोजित हो रहा है। चार तीर्थ की उपस्थिति है। सरदारशहर के सौभाग्य हैं। गुरुदेव पट्ट पर आयोजित हुए हैं। संघ द्वारा नई पछेवड़ी ओढ़ाई गई है। गुरु के गुण गाए जा रहे हैं। गुरुदेव बख्शीशें करवा रहे हैं। माणक गणी, काया कोमल थी, लंबाई अच्छी थी। उनको देशाटन से बहुत प्यार था। उनकी विशेषताएँ बताई गई हैं। मन में नई कल्पनाएँ आ रही हैं।

पूज्यप्रवर ने छोटी-बड़ी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। साध्वी संवरयशा जी ने २१ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

मुख्य नियोजिका जी ने सिद्धों की विशेषताओं के बारे में विस्तार से समझाया। सिद्धों के अनेक पर्यायों के बारे में समझाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुकेश रांका, संदीप बोरदिया, दिलीप मेहता ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

तेरापंथ धर्मसंघ की संस्थाए...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इसी प्रकार जो दोष रूपी गंदगी लग जाती है, उसको मिटाने का उपाय है, प्रायश्चित। बीमारी होती है, तो दवाई लेकर आदमी उससे मुक्त हो सकता है। चिकित्सा के संदर्भ में चार चीजें देख लें—चिकित्सक, रोगी, रोगी की बीमारी और औषध विधि।

चिकित्सक के रूप में तो तीर्थंकर, आचार्यों या प्रायश्चित देने वाले अधिकृत व्यक्ति को मान लें। दोष करने वाला व्यक्ति रोगी है। जो दोष सेवन किया है, वो बीमारी के समान है। जो प्रायश्चित प्रदाता बताता है, देता है, वो दवाई है। पाँचवीं चीज मैं जोड़ना चाहूँगा, उचित हो तो मान लें। रोगी वो दवाई ले तो रोग ठीक हो सकेगा। चिकित्सक ने दवाई बता दी पर दवाई न ले तो रोग ठीक कैसे हो सकेगा। लिए हुए प्रायश्चित को उतारना चाहिए।

प्रायिश्चत के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण अर्हता होनी चाहिए कि दोष सेवी व्यक्ति में भद्रता-ऋजुता। ऋजुता से अपनी गलती बता दें। डॉक्टर से बीमारी मत छिपाओ, गुरु से गलती मत छिपाओ। तो रास्ता प्रशस्त हो सकता है। कोई गलती स्वीकार ही नहीं कर रहा है, उसको क्या प्रायश्चित दें। अगर शुद्ध होना है, आगे को ठीक करना है, सरल मन से अपनी गलती योग्य स्थान पर बता दो ताकि इलाज हो सके।

एक बार तो पूरे संयम जीवन की आलोयणा हो जाए तो बढ़िया है तो स्नान सा हो सकता है। आत्मा आगे शुद्ध होकर जाए।

प्रायश्चित के नौ प्रकार बताए गए हैं—आलोयना के योग्य, प्रतिक्रमण के योग्य, आलोयना और प्रतिक्रमण दोनों के योग्य, विवेक के योग्य, व्युत्सर्ग के योग्य, तप के योग्य, छेद के योग्य, मूल के योग्य और अनवस्थाप्य के योग्य वर्तमान समय में प्रायश्चित ले लेना सक्षम उपाय है, अपनी आराधना-शुद्धता हो जाए।

काँटा चुभ गए है, पड़ा रहेगा तो तकलीफ देगा, काँटा निकाल दो। ठीक-ठाक कर दो, आराम हो जाएगा। विशेष दोष भी काँटा है, स्वयं निकाल लो या दूसरे से निकलवा लो। उसी में लाभ है। वरना दोष करते-करते उनका फैलाव हो जाएगा। शास्त्र में रास्ता बताया है, छद्मस्थ हो तो गलती हो सकती है, प्रायश्चित ले लो, ठीक हो जाओगे।

प्रायश्चित के लिए डरो मत, संकोच मत करो, जो होगा सो होगा। महाव्रतों या समिति-गुप्ति में दोष लग जाए तो उनका शुद्धिकरण का उपाय प्रायश्चित है, वो हमें काम में यथोयोग्य लेते रहना चाहिए। शास्त्रकार ने बताया है, प्रायश्चित का उपाय काम में लो ताकि संयम का शरीर स्वस्थ रहे। साधु संस्था व आम जनता के लिए भी काम की बात है। सरलता से स्वीकार कर लो ताकि आगे का रास्ता प्रशस्त बन सके।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

महासभा अध्यक्ष सुरेश गोयल ने कहा कि तेरापंथ के विकास में श्रावक समाज का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मैं इस सम्मेलन की निष्पत्ति व सफलता की कामना करता हूँ। महासभा नित्य नए क्षितिज छूती रहे। पूज्यप्रवर का वृहद-हस्त महासभा पर बना रहे।

मुख्य न्यासी महासभा भंवरलाल बैद ने कहा कि पूज्यप्रवर की अहिंसा यात्रा अपने मिशन के साथ आगे बढ़ रही है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। महासभा प्रतिनिधि सम्मेलन का संचालन महासभा के महामंत्री रमेश सुतरिया ने किया।

सब पापों का मूल कारण है राग-द्वेष : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १० अगस्त, २०२१

ज्ञान, दर्शन और चारित्र के परम आराधक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में कहा गया है—शास्त्रकार ने बताया है, पाप के आयतन (स्थान) नौ हैं—प्राणातिपात, मृषावाद, अदतादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया और लोभ।

जैसे पुण्य बंध के नौ कारण बताए गए हैं, पाप बंध के भी नौ कारण बताए गए हैं। हमारे यहाँ अठारह पाप प्रसिद्ध हैं। उनमें से प्रथम नौ पाप का यहाँ उल्लेख किया गया है। अठारह में से नौ का उल्लेख इसलिए है कि यह नौवाँ स्थान है। दूसरा कारण यह है कि नौ के सिवाय और कोई पाप होता ही नहीं। जो कुछ है, वो इन नौ के अंतर्गत समाविष्ट हो सकते हैं। यह एक प्रसंग से समझाया।

माया-मृषा, मृषावाद में आ गया। राग-द्वेष ये मोह-माया में आ गए। कलह क्रोध के बिना कैसे होगा। ये नौ ही अन्य नौ में प्रतिबिंबित मानो एक तरह से हो रहे हैं। एक अपेक्षा से मूल नौ भेद शास्त्रकार ने नौवें स्थान के २६वें सूत्र में प्रदर्शित-प्रकट कर दिए।

ये अठारह के अठारह पाप योग आश्रव के अंतर्गत हैं या इनमें कोई कषाय आश्रव के भी प्रकार आए हैं। ये विद्वत चारित्रात्माएँ मुझे ग्रंथ के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। इन नौ में भी और गहराई में जाएँ तो पाँच तो कार्य हैं और चार मानो कारण हैं। ये क्रोध, मान, माया, लोभ मूल कारण हैं। इनसे प्राणातिपात, मृषावाद, अदतादान, मैथुन, परिग्रह मानो निष्पन्न हो सकते हैं।

नौ में से चार आधार हैं, पाँच आधेय हैं। अगर ये चार—क्रोध, मान, माया, लोभ समाप्त हो जाए तो फिर कुछ नहीं बचेगा। आधार नहीं तो फिर आधेय ही नहीं हो सकते। १८ में संक्षेप करें तो पाप ९ है। ९ में और संक्षेप करें तो ये चार हैं। इन चारों में भी संक्षेप करना हो तो कोई कह दे राग-द्वेष।

इन नौ आयतनों में तीन चीजें हैं—एक तो प्राणातिपात पाप स्थान, दूसरी है, प्राणातिपात की प्रवृत्ति और तीसरी चीज है, प्राणातिपात पाप-पद। इन तीनों में एक तरह से अतीत, वर्तमान और भविष्य समाया हुआ है। जो पहले से मोहनीय कर्म के अंतर्गत बंधा हुआ है, उसके कारण से जीव प्राणातिपात की प्रवृत्ति करता है। तो प्राणातिपात पापस्थान अतीत से जुड़ा हो जाता है।

वर्तमान में जीव हिंसा कर रहा है, प्रवृत्ति कर रहा है, वह उसका वर्तमान है। उस प्राणातिपात की प्रवृत्ति से जो पाप का बंध होगा, उसका भविष्य में फल मिलने की बात है, यों प्राणातिपात पाप पद भविष्य से जुड़ा हो जाता है। हम अठारह पापों में भूत, वर्तमान और भविष्य इन तीनों कालों को भी जोड़ सकते हैं।

इसी प्रकार अठारह पापों को अतीत, वर्तमान और भविष्य के साथ जोड़ सकते हैं। साधु को तो इन नौ स्थानों से विरत रहने का संकल्प है, प्रत्याख्यान है, रहना ही चाहिए। गृहस्थ है वे भी ध्यान दें कि इन पाप के आयतनों से जितना बचा जा सके बचने का प्रयास होना चाहिए। गृहस्थ हिंसा से बचे। जमीकंद अनंतकाय है, इनसे बचें। मांसाहार तो भोजन में न आ जाए। दवाई में भी ध्यान रखें, नॉनवेज न आ जाए। छोटे जीवों की हिंसा से भी बचें। (शेष पृष्ठ ४ पर)

शरीर का उपयोग आध्यात्मिक लाभ उठाने के लिए करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ८ अगस्त, २०२१

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने शरीर की एक स्थिति का चित्रण किया है कि हमारा यह औदारिक शरीर है, नौ स्रोतों के झरने वाला शरीर है। नौ स्रोतों से पदार्थ बाहर आते रहते हैं। नौ स्रोत हैं–दो कान, दो नेत्र, दो नाक, मुँह, उपस्थ और अपज। ये नौं ऐसे द्वार हैं, जहाँ से पदार्थ बाहर आते रहते हैं।

शरीर से पसीना भी आता है। संभवतः पसीना जहाँ से निकलता है उसकी विभक्षा यहाँ नहीं की गई है। पुद्गल मनोज्ञ-अमनोज्ञ हो सकते हैं। दो कान द्वार हैं, इनसे मैल निकलते हैं। शरीर में कितनी अशुद्धि है, जिसे हम लिए चल रहे हैं। भीतर है, तब तक घृणा नहीं होती बाहर निकलते ही घृणा हो जाती है।

अशुचि है, यह शरीर है। वैराग्य का भी कारण बनता है, यह अशुचित्व का भाव। जिस शरीर के प्रति मैं आसक्त हो रहा हूँ, वह शरीर तो कितना गंदगी से संपन्न है। भगवान मल्लीनाथ ने भी मानो इस अशुचि के आधार पर अपने मित्रों-राजाओं को बोध देने का प्रयास किया। उस प्रसंग को समझाया।

कान, नाक, आँख, मुँह आदि से अनेक रूप में पदार्थ निकलते हैं। वर्तमान में तो मास्क से स्वयं की रक्षा व दूसरों की रक्षा कर रहे हैं। जो काम प्रेरणा से नहीं होता वो कोरोना ने कर बताया। कोरोना से तो एकांतवास सा हो गया। यह दुनिया की स्थिति है कि जो काम आदमी नहीं कर सकता वो काम प्रकृति-नियति करा देती है।

स्रोत है, उनसे पदार्थ निकलता है, उनसे गंदगी निकलती है, वो एक बात है। पर स्रोतों को हम सुशोभित कैसे करें। आध्यात्मिक और गुणात्मक दृष्टि से देखें तो कान की शोभा है–ज्ञान का श्रवण करो। एक प्रवचनकार के बोलने के कारण कितने कान शोभायमान हो जाते हैं। सुनने का, जानने का मौका मिल जाता है।

सुनते-सुनते ज्ञान वृद्धि हो सकती है। सुनते-सुनते कई बार समस्या का समाधान मिल सकता है। व्याख्यान देने की कला का भी स्वगत किया जा सकता है। सुनने से अनेक पापों से बचा जा सकता है। सुनने से जिज्ञासा पैदा हो सकती है। आँखों का बढ़िया उपयोग करें। आँखों से संतों के दर्शन किए जा सकते हैं। ग्रंथों को पढ़ा जा सकता है।

नाक से प्राणायाम करने में, दीर्घ-श्वास का प्रयोग करने के काम में लिया जा सकता है। नाक को ध्यान-साधना के प्रयोग में सहयोगी बना सकते हैं। मुँह से हम कितना अच्छा बोलकर स्वयं व दूसरों को लाभान्वित कर सकते हैं। मुँह से व्याख्यान देकर वाणी से पढ़ाकर उपयोग किया जा सकता है और भी अंग हैं, जिनसे ये पदार्थ निकलते हैं। कुल ये नौं स्रोत हैं।

यह शरीर पाप का साधन बन सकता है और धर्म का माध्यम-साधन भी बन सकता है। हम यह प्रयास करें कि इस शरीर को धर्म का साधन बनाएँ, अच्छे कार्यों में शरीर का उपयोग कर सकते हैं। यह तो हाड-मांस से बना है। गंदगी इसका एक पक्ष है। शरीर का दूसरा पक्ष है कि शरीर से कितना बढ़िया उपयोग किया जा सकता है।

हम शरीर का लाभ उठाएँ। इसे तपस्या में, सेवा में, ज्ञानार्जन में, चिंतन-मनन, लेखन जो भी उपयोगी हो आध्यात्मिक अनुष्ठानों में इसका उपयोग करने का प्रयास करें। गृहस्थ भी जितना हो सके, आध्यात्मिक लाभ उठाने में संयुक्त करें, यह काम्य है।

माणक महिमा का विवेचन करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि मघवागणी सरदारशहर विराज रहे हैं। संतों में ऊहापोह है कि गुरुदेव की शारीरिक स्थिति ठीक नहीं है। संघ सनाथ रहे ऐसा काम होना चाहिए। मघवागणी भी आगामी व्यवस्था का चिंतन कर रहे। फागुन सुदी चौथ को मघवागणी युवाचार्य नियुक्ति पत्र लिख देते हैं। महासती नवलांजी को वि०सं० १९४६ को पत्र सौंप दिया। फिर साधुओं को बुलाकर प्रेरणा दे रहे हैं। साथ में फरमा दिया कि माणकलाल आलोयणा थे ही दिया करो। हाजरी भी थे लिया करो। संघ को चिंता मुक्त कर दिया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि कुमार श्रमण केशी और गौतम गणधर के मध्य हुए संवाद को व्याख्यायित करते हुए कहा कि धर्म का वैशष्ट्य है कि धर्म कल्पवृक्ष और चिंतामणी रत्न से भी ज्यादा सब कुछ देता है, जिसका वह संकल्प भी नहीं करता है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि सबका अपना-अपना चिंतन होता है। सबके शास्त्र अच्छे हो सकते हैं, पर शास्त्रों का निर्माण जिन मनीषियों ने किया है, उनका मंतव्य यही रहा है कि शास्त्र उपशम-शांति प्रदान करने वाले होते हैं। शास्त्रज्ञ वही व्यक्ति हो सकता है, जिसका मन शांत हो।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में व्यवस्था समिति उपाध्यक्ष ज्ञानचंद कांठेड, मंत्री रजनीश नोलखा, मंत्री एकता ओस्तवाल, मैना कांठेड़, निष्ठा गांधी, पारस आंचलिया, संजय हिरण ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अकिंचन अपरिग्रही साधु को देवता भी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तीर्थंकरों ने निरवद्य वृत्ति का निर्देश-देषना दी है। मोक्ष की साधना का हेतु है शरीर। इसलिए शरीर की सुरक्षा करनी है। सुरक्षा के लिए उसको भोजन देना है। भगवान महावीर ने लंबी तपस्याएँ की थीं तो बीच-बीच में आहार भी लिया था। जनोद्धार भी इस शरीर से ही हो सकेगा।

गृहस्थ व्यापार करते हैं, कर्मचारी रखते हैं, तो कर्मचारी को वेतन भी देना होता है। शरीर ऐसा कर्मचारी है कि बिना वेतन काम करता रहे, इतना भोला नहीं है। शरीर काम करेगा तो भोजन भी करेगा। इसकी सुरक्षा का ध्यान भी रखो तो यह काम कर सकेगा।

साधु भोजन कैसे ले? साधु भोजन के लिए भिक्षा करे, क्योंकि साधु के पाँच महाव्रत हैं। पहला महाव्रत है–सर्व प्राणातिपात विरमण। भोजन के निर्माण में भी हिंसा होती है। साधु को हिंसा से बचने का प्रयास करना है, तो साधु क्या करे?

खाना पकाए तो हिंसा, दूसरों से पकवाए तो भी हिंसा, पकने-पकाने का अनुमोदन करोगे तो किसी रूप में हिंसा के साथ जुड़ जाओगे। मीत भोजन भी न लेना, मोल भोजन भी न लेना, न लिवाना, न अनुमोदना करना। हिंसा से बचने के लिए साधु भ्रमर की तरह कार्य करें। भिक्षा ग्रहण करो। थोड़ा-थोड़ा जगह-जगह से ग्रहण करो। चीड़ी चोंच पर पानी ले ले तो समुंद्र के क्या फर्क पड़ेगा।

जैन धर्म में भिक्षा की निर्मल विधि है। साधुओं के लिए खाना बनाना कल्पित नहीं है। साधु की भिक्षा में मांसाहार न हो, परिहार्य है। शाकाहार भोजन भी साधु के लिए न बना हो। ये मुख्य दो नियम हैं। और भी कई नियम हैं। अहिंसा और अपरिग्रह पर आधारित भिक्षा विधि आगम में बताई गई है।

भिक्षा विधि इसलिए है कि साधु अहिंसक है और अकिंचन है। साधु हिंसा से और परिग्रह से बचे। माँग-माँगकर लाना बड़ा दुष्कर काम है। साधु को तो हर चीज माँगकर लेना पड़ता है, पर माँगना भी हमारी साधना है। इसमें साधु की हीनता नहीं है। साधु के क्या स्वाभिमान, क्या अभिमान। यह तो साधु का अकिंचन व्रत है।

किंचन-कंचन जिसके पास है व दुनिया का बड़ा आदमी नहीं है। अमीर अपनी संपत्ति का मालिक हो सकता है, दुनिया का नहीं। साधु ऐसा है, जिसने त्याग कर दिया, लालसा, आशा, वांच्छा छोड़ दी, वो मानो अपना मालिक बन गया।

तीन लोक का मालिक वह है, जो अकिंचन है। परिग्रह का त्याग कर दिया है, वो किसी अपेक्षा से त्रेलोक्य का मालिक बन जाता है। साधु भीखमंगा नहीं है, वो तो त्यागी है, उसको जो दान देता है, वो धन्य हो जाता है। करोड़ों को संपत्ति के मालिक साधु के चरणों में झुकते हैं। देवता भी उसे नमस्कार करते हैं, जिसका मन धर्म में रमा रहता है।

माँगना हमारी तपस्या है। कितना बड़ा त्याग है। त्याग एक संपदा है, परिग्रह से दूर रहना साधु की निर्मलतामय साधना होती है। यहाँ शास्त्रकार ने इस सूत्र में नौ कोटि परिशुद्ध भिक्षा का निरूपण किया है। न हनन करना, न करवाना, न अनुमोदन करना। न पकाना, न पकवाना, न पकवाने का अनुमोदन करना। न मोल लेना, न मोल लिवाना, न मोल लेने वाले का अनुमोदन करना। इस सूत्र से एक संकेत हमें मिल सकता है कि साधु का जीवन कितना त्यागमय होता है।

माणक महिमा का विवेचन करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि कालूजी स्वामी बड़ा के प्रति कालूगणी व तुलसीगणी की अच्छी भावना थी। वे तीन आचार्यों के सम्माननीय रहे हैं। मोती जी स्वामी के बारे में भी बताया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने सम्यक्त्व के बारे में विस्तार से समझाया। जो नव तत्त्व को जानता है, उसके सम्यक्त्व होता है। धर्म के प्रति श्रद्धा का भाव है, तो भी उसके सम्यक्त्व हो सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सुमित नाहर, योगेश चिंडालिया, प्रदीप भंडारी, आंचल दक, पुष्पा पामेचा ने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

७५वें स्वतंत्रता दिवस अमृत महोत्सव की पूर्व संध्या - आओ याद करें वीरों को

दिल्ली।

तेयुप, दिल्ली द्वारा ७५वें स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर 'आओ याद करें वीरों को' देशभक्ति गीतों का सांस्कृतिक एवं कवि सम्मेलन का आयोजन ओसवाल भवन, शाहदरा में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का वर्चुअल प्रसारण फेसबुक के माध्यम से भी किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप परामर्शक व अणुविभा के संयुक्त मंत्री इंद्र बैंगाणी द्वारा नमस्कार महामंत्र पाठ के सामूहिक उच्चारण से हुआ। पवन श्यामसुखा, अशोक सिंधी, रितेश मालू एवं प्रवीण बैद ने विजय गीत का संगान किया। तेयुप अध्यक्ष विकास बोथरा ने सभी पधारे हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित कवि राजेश चेतन, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवि अनिल अग्रवंशी एवं देश की जानीमानी कवियत्री बलजीत कौर ने अपनी रचनाओं से वीरों की शहादत को सलाम करते हुए सुमधुर काव्यपाठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या को चार चाँद लगाए। दिल्ली के विशिष्ट एवं उदयीमान संगायक व संगायिकाओं–विमल गुनेचा, संजय भटेवरा, विकास सिंधी, राहुल बैद, ईशान नौलखा, प्रीति-महक श्यामसुखा एवं तेयुप सांस्कृतिक प्रभारी रितेश मालू ने अपनी सुमधुर देशभक्ति गीतों से वातावरण को देश-भक्तिमय बना दिया।

कार्यक्रम में अभातेयुप कार्यकारिणी सदस्य जतन श्यामसुखा, संजय संचेती, दिल्ली सभा के संगठन मंत्री एवं तेयुप पूर्व अध्यक्ष अशोक संचेती, ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ एवं अन्य पदाधिकारी, शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, मंत्री सुरेश भंसाली, गांधीनगर सभा के उपाध्यक्ष एवं विकास मंच के महामंत्री अनिल पटवा, विकास मंच के ट्रस्ट सचिव दिनेश डूंगरवाल, दिल्ली ज्ञानशाला के संयोजक अशोक बैद, टीपीएफ के मंत्री अंकित श्यामसुखा, कार्यक्रम के प्रायोजक प्रभात खटेड़, समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों सहित तेयुप के सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को गरिमामय बनाया। बड़ी संख्या में श्रावक समाज एवं तेयुप कार्यकर्ताओं ने फेसबुक के माध्यम से अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

कार्यक्रम के संयोजक मनीष महनोत, सांस्कृतिक प्रभारी रितेश मालू, क्षेत्रीय संयोजक पवन पारख एवं अनेक कार्यकर्ताओं का उल्लेखनीय श्रम रहा। कार्यक्रम हेतु अर्थ सौजन्य मातुश्री किरण देवी, कमल सिंह खटेड़ परिवार का प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन हेमराज राखेचा ने किया एवं आभार ज्ञापन तेयुप के मंत्री सौरभ आंचलिया ने किया।

✦ जीवन को अच्छा बनाने के लिए व्यसनमुक्तता आवश्यक है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ *अज्ञानी आदमी जाने-अनजाने समस्याओं को उत्पन्न करने वाला बन सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

शपथ ग्रहण समारोह

नोएडा-दिल्ली।

नोएडा महिला मंडल के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह ग्रीन पार्क, दिल्ली में शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। मंगलाचरण नोएडा पूर्वाध्यक्ष संतोष बैद ने किया। शासनश्री साध्वी शशि रेखा जी ने कहा कि समर्पित कार्यकर्ता जागने वाला, जगाने वाला और नियमित समय देने वाला होता है। साध्वी शीतलयशा जी ने संघ व संघपति के प्रति समर्पित भाव रखने की प्रेरणा दी।

दक्षिण दिल्ली सभा अध्यक्ष संजय चोरड़िया व नोएडा की निवर्तमान अध्यक्ष अर्चना भंडारी ने पधारे हुए सभी आगंतुकों का स्वागत किया। महासभा उपाध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली सभा के महामंत्री डालमचंद बैद ने नवगठित कार्यकारिणी को आशीर्वाद प्रदान किया। नोएडा महिला मंडल की बहनों ने 'ऊर्जा वाणी' शब्द चित्र की सुंदर प्रस्तुति दी।

अभातेमम के कार्यसमिति सदस्य (हरियाणा व यूपी प्रभारी) नोएडा की निवर्तमान अध्यक्ष अर्चना भंडारी ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष कविता लोढ़ा को शपथ दिलाई। बहनों ने गीतिका द्वारा अभिनंदन किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष कविता लोढ़ा ने देव, गुरु और धर्म के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अनुभवी पूर्वाध्यक्षों से मार्गदर्शन और मंडल परिवार से सहयोगी की अपेक्षा रखी।

महिला मंडल, दिल्ली की अध्यक्ष मंजु जैन, साउथ दिल्ली सभा मंत्री माया दुगड़, नोएडा पूर्व मंत्री प्रीति छाजेड़ ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को शुभकामनाएँ दी। महिला मंडल नोएडा द्वारा नोएडा के निवर्तमान अध्यक्ष व मंत्री को मोमेंटो व सम्मान पत्र के द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति दिल्ली सभा के पूर्वाध्यक्ष गोविंदराम बाफना, दिल्ली सभा के मंत्री हीरालाल गेलड़ा, दिल्ली महिला मंडल निवर्तमान अध्यक्ष निर्मला कोठारी, पूर्वाध्यक्ष रजनी बाफना, महिला मंडल उपाध्यक्ष हेमराज चोरड़िया, मंत्री यश बोथरा की रही। तेमम, नोएडा की संरक्षिका, परामर्शक, पूर्वाध्यक्ष और मंडल की बहनें उपस्थित थीं। आभार ज्ञापन नवनिर्वाचित सहमंत्री प्रेम सेखानी ने किया। कार्यक्रम का संचालन नवनिर्वाचित मंत्री दीपिका चोरड़िया ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेमम का शपथ ग्रहण समारोह रखा गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से समारोह का शुभारंभ किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि चेन्नई तेमम ने दायित्व ग्रहण किया है, घर-परिवार और संस्था को बैलेंस रखते हुए संघ की प्रभावना करना है। साध्वीश्री जी ने महिला मंडल की बहनों को आगे बढ़ने के लिए आशीर्वाद प्रदान किया।

महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन उपाध्यक्ष अलका खटेड़ ने किया। निवर्तमान अध्यक्ष शांति दुधोड़िया ने सभी का आभार व्यक्त किया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की अनिता चोपड़ा ने नवगठित टीम को शपथ दिलाई। निवर्तमान अध्यक्ष शांति दुधोड़िया, मंत्री गुणवंती खाटेड़ एवं कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष पुष्पा हिरण, मंत्री रीमा सिंघवी एवं कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर को दायित्व हस्तांतरण किया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने सभी का स्वागत करते हुए अपनी भावी योजनाओं को सदन में रखा। सहमंत्री लता पारख ने नवगठित टीम का परिचय दिया। कन्या मंडल की निवर्तमान संयोजिका हार्दिका मूथा ने नवनिर्वाचित संयोजिका भवी बाफना को दायित्व हस्तांतरण किया और भवी बाफना ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

कन्या मंडल की राष्ट्रीय संयोजिका यशिका खटेड़ ने कन्या मंडल के सफलतम कार्यकाल के लिए बधाई प्रेषित की। सभा अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश नौलखा, टीपीएफ के निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश नाहर ने शांति दुधोड़िया के सफलतम कार्यकाल के लिए एवं नवनिर्वाचित अध्यक्ष को कार्यकाल की अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित की।

महिला मंडल की बहनों द्वारा सभा अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, वयोवृद्ध सुश्रावक सुमेरमल पारख-लता पारख, कंचन भंडारी, हेमलता नाहर से मिले सहयोग के लिए मोमेंटो से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष गुणवंती खटेड़ ने किया एवं आभार ज्ञापन सहमंत्री रीमा सिंघवी ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में महिला मंडल की नवमनोनीत अध्यक्ष लता बाफना का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण के पश्चात मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया।

निवर्तमान अध्यक्ष सरोज आर बैद ने नवमनोनीत अध्यक्ष लता बाफना को दायित्व बोध ग्रहण की शपथ दिलाते हुए अपनी शुभकामनाएँ दी तथा सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। लता बाफना ने मंत्री मंडल एवं कार्यकारिणी बहनों के नाम की घोषणा करते हुए अपने-अपने कार्य के लिए शपथ दिलाई।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि दायित्व बोध ग्रहण कार्यक्रम में उत्साह, उमंग और प्यार बरस रहा है। सौहार्द से किया गया काम हमेशा रंग लाता है। बधाइयों के साथ सभी बहनों को कार्य की सफलता की बधाई व आशीर्वाद मिला।

सभाध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, अभातेमम पूर्व महामंत्री वीणा बैद, कंचन छाजेड़ ने अभिव्यक्ति देते हुए बधाई दी। अध्यक्ष लता बाफना ने कहा कि यह जो रंग दिख रहा है वह साध्वी कंचनप्रभा जी तथा साध्वी मंजुरेखा जी आदि साध्वियों के श्रम भरे कार्य की निष्पत्ति है। मंत्री सीमा छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। उपाध्यक्ष सुमन पटावरी, शोभा बोथरा, मंत्री सीमा छाजेड़, सहमंत्री हेमलता सुराणा, मंजु बोथरा एवं वंदना भंसाली, कोषाध्यक्ष बीना कोठारी, प्रचार मंत्री पूनम दक को केबिनेट में शामिल किया गया। हेमलता सुराणा ने संयोजन एवं सुमन पटावरी ने आभार व्यक्त किया।

साथी के साथ कैसे जीएँ

जीन्द।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में महिला मंडल के तत्त्वावधान में दंपति शिविर का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम शुभारंभ हुआ। महिला मंडल ने गीत से मंगलाचरण किया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि दंपति का अर्थ होता है पति-पत्नी का जोड़ा। जोड़ा भाई-भाई का भी होता है, बहन-भाई का भी होता है। सास-बहु का देवरानी-जेठानी का भी होता है। यहाँ दंपति शिविर का विषय हैं एक चक्के से गाड़ी नहीं चल सकती, एक हाथ से ताली नहीं बजती, एक तार से बल्ब नहीं जलता, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, अकेले पुरुष या अकेली स्त्री से न परिवार होता है न समाज होता है। जहाँ दो हैं वहाँ संबंध है। जहाँ जोड़ा होता है वहाँ परस्पर व्यवहार होता है।

संबंधों को मधुर कैसे बनाएँ, साथी के साथ कैसे जीएँ, दाम्पत्य जीवन सुखी कैसे बनाएँ उसके कुछ सूत्र साध्वीश्री जी ने प्रस्तुत किए।

साध्वी सुमंगलाश्री जी ने सकारात्मक दृष्टिकोण, कुशल व्यवहार एवं चरित्र निष्ठ विषय पर सुंदर प्रस्तुतिकरण किया। महिला मंडल अध्यक्षा ने आगंतुकों का स्वागत भाषण से किया।

रेणु, स्नेहा, मीना आदि ने समन्वय सामंजस्य आदि विषय पर प्रेरणास्पद एवं आकर्षण एकांगी प्रस्तुत की। प्रेक्षा जैन, रक्षिता जैन ने ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता गेम के द्वारा करवाई।

कार्यक्रम की तैयारी में साध्वी सुलभयशा जी का पूर्ण सहयोग रहा। सभा मंत्री नारायण कुणाल जैन, कांता जैन ओमपति जैन, संतोष जैन, बिंदु जैन, रेणु जैन, प्रेक्षा जैन, रक्षिता जैन, मोहिन जैन के परिश्रम से कार्यक्रम सफल रहा।

डॉ० अनिल जैन विनम्र सेवाभावी संतों की सेवा में तत्पर समर्पित श्रावक हैं, उनकी पतनी डॉ० मीनाक्षी भी सेवा में आगे रहती है। उनका सम्मान महिला मंडल ने मोमेंटो के द्वारा किया। डॉ० सुरेश जैन पत्नी डॉ० ममता जैन, पत्रकार महावीर मित्तल एवं पत्रकार कमल जैन को मोमेंटो एवं साहित्य से पुरस्कृत किया गया।

सभी प्रतियोगी प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बेस्ट कपल स्नेहा-संदीप, आशु-दीपा, राजेश-मीना आदि सभी को सम्मानित किया गया। उपस्थिति गरिमामय रही श्रोताओं की और भाग लेने वालों की भारी भीड़ थी। कार्यक्रम के प्रायोजक डॉ० पी०सी० जैन, राजेश जैन, संजय जैन थे। कार्यक्रम का संचालन कुणाल जैन ने किया। आभार ज्ञापन मीना जैन ने किया।

सब पापों का मूल कारण...

(पृष्ठ २ का शेष)

गृहस्थ अहिंसा के मार्ग पर चलने का प्रयास करें। मृषावाद से बचें। चोरी से बचें। गुस्सा न करें, शांति से काम हो सकता है। घमंड भी किस बात का करना। पैसा आज है, कल हो न हो। माया से बचें, व्यवहार में सरलता रखें। लोभ-लालच ज्यादा न करें। गृहस्थ भी इन नौ पाप आयातनों से बचने का प्रयास करें, ताकि आत्मा का कल्याण हो सके, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने माणक महिमा विवेचन करते हुए फरमाया कि मघवागणी ने खाँसी रुकने पर युवाचार्य को बुलाकर शिक्षाएँ फरमायी। अंतिम रात्रि में युवाचार्यश्री व संघ को शिक्षा फरमा रहे हैं। कुछ समय बाद मघवागणी को एक उबासी आई और देह शांत हो गई। वि०सं० १९४९ चैत्र कृष्णा पंचमी का दिन। मध्य रात्रि में संसार से महाप्रयाण हो गया। कालूजी स्वामी ने समय पर चौविहार संथारा पचखाया, मघवागणी श्रद्धा भी चार शरणा सुनाया। शरीर को श्रावकों को संभलवा दिया। लोगस्स का ध्यान किया।

श्रावक कालूराम जम्मड़ व श्रीचंद गधैया ने पहले से सारी तैयारी कर बैकुंठी बना ली थी। सारा समान मँगा लिया था। सुबह श्रावक सामान आपस में लिए मिले। कालूराम ने सारी बात बताई। सारा रहस्य खोला और बैकुंठी को मँगाया गया। ५१ खंडी बैकुंठी थी। ये सारा काम श्रीचंद गधैया के यहाँ हुआ था। ठाट-बाट से अंतिम यात्रा निकाली गई। सरदारशहर के पश्चिम दिशा मे दाह-संस्कार हुआ।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर ने ११-११ पर सम्यक्-दीक्षा ग्रहण करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि सिद्ध जीव अनंत है, उनका पुनर्जन्म नहीं होता है। राग-द्वेष पुनर्जन्म के हेतु होते हैं, कर्म के बीज हैं, मूल। इंद्रिय सुख तात्कालिक है, क्षणिक है। मोक्ष को सिर्फ मनुष्य प्राप्त कर सकता है और कोई जीव नहीं, मोक्ष के लिए तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में ऋषि दुगड़, सुशील आच्छा, रजनीश मेहता, प्रकाश बोहरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2019-21

✲ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✲ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✲ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✲ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✲ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✲ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✲ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✲ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✲ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

त्रिदिवसीय जीवन निर्माण शिविर का आयोजन

नोहर।

तेरापंथ भवन में शासनश्री मुनि विजय कुमार जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय किशोर, कन्या व ज्ञानशाला के बच्चों के जीवन निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर अंशकालिक था। प्रतिदिन तीन समय कक्षाएँ लगीं। कक्षा सुशीला बांठिया व डॉ० एकता लुणिया ने ली। मुनिश्री का शिविरार्थियों के लिए सामायिक उद्बोधन तदनंतर कायोत्सर्ग की कक्षा सुशीला ने ली। जिसमें बालक-बालिकाओं का प्रस्तुतीकरण व मुनिश्री से बालक-बालिकाओं को जीवन निर्माण का प्रेरणा पाथेय मिलता रहा। तीन दिनों के अलग-अलग विषय निर्धारित थे, चौथे दिन प्रवचन में शिविर का समापन हुआ।

शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने बच्चों से कहा—आपकी यह अवस्था जीवन में निर्माण की है। बुरी संगत से सदा दूर रहें। किसी को मित्र बनाते समय सोचें कि वह किस जाति व कुल का है, किस धर्म व संस्कृति से जुड़ा हुआ है। जीवन के भव्य प्रासाद को मजबूत बनाने और नष्ट करने में मित्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है।

मनीषा लुणिया ने शिविर संचालन किया। महिला मंडल की अध्यक्षा किरण देवी छाजेड़, मंत्री राधा सिपानी, कन्या मंडल संयोजिका नीरू छाजेड़, ज्ञानशाला प्रभारी प्रिया लुणिया व सविता बांठिया ने सभी व्यवस्थाओं को संभाला। प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय के अलावा सभी को प्रोत्साहित किया गया। अनुशासन पुरस्कार रौनक तातेड़ व यशीता सिपानी को दिया गया। सुशीला बांठिया व डॉ० एकता लुण्या ने स्वास्थ्य सुरक्षा और योगाभ्यास के बारे में सभी को बताया। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से एवं मंगलाचरण स्थानीय महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा किया गया। शिविर उपलब्धिपूर्ण रहा।

शपथ ग्रहण समारोह एवं मंत्र दीक्षा कार्यक्रम

हासन (कर्नाटक)।

बच्चों में सुसंस्कारों के बीजारोपण हेतु तेयुप ने मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया।

हासन में तेयुप की नई कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में समायोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। कन्या मंडल के द्वारा मंगलाचरण किया गया। तत्पश्चात श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेयुप के उपाध्यक्ष नितेश सुराणा ने किया। तेयुप ने विजय गीत का संगान किया।

निवर्तमान अध्यक्ष महेश सुराणा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष जितेंद्र गादिया को तेयुप, हासन के नए अध्यक्ष के रूप में शपथ दिलाई। अध्यक्ष जितेंद्र गादिया ने अपनी नई कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। नए अध्यक्ष जितेंद्र गादिया ने सबका स्वागत करते हुए निवर्तमान अध्यक्ष महेश सुराणा का सम्मान किया और उनके कार्यों की सराहना की।

ममताबाई कोठारी ने ज्ञानशाला बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलाते हुए मंत्र दीक्षा के महत्त्व के बारे में समझाया। लगभग ४० बच्चों को मंत्र दीक्षा दिलाई गई। तेयुप ने बच्चों को प्रोत्साहन हेतु उपहार भेंट किए।

इस अवसर पर महासभा सदस्य महावीर भंसाली, तेरापंथ सभा अध्यक्ष जयंतीलाल कोठारी, मंत्री सोहनराज तातेड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष चांदमल सुराणा, मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष देवराज पारलेचा, स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष बसंत बोहरा, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता कोठारी, मंत्री विनीता सुराणा, तेयुप उपाध्यक्ष नितेश सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री गौरव गुलगुलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। महेश सुराणा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'मिलकर कदम बढ़ाएँ' का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा महामंत्रोच्चार के पश्चात तुलसी संगीत सुधा के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। तत्पश्चात श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना द्वारा किया गया। कार्यशाला के शीर्षक गीत 'मिलकर कदम बढ़ाएँ' की प्रस्तुति मनीष पगारिया द्वारा दी गई। तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने स्वागत अभिव्यक्ति प्रेषित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना ने कहा कि किसी भी कार्य को करने के लिए लक्ष्य निर्धारण आवश्यक है। हमें कहाँ पहुँचना है, ये तय करना है, युवाओं को कठिनाइयों से घबराना नहीं बल्कि मिलकर एक साथ कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि युवकों की जागृति, संगठन और अनुशासन अनुकरणीय है। अभातेयुप के तत्त्वावधान में सामाजिक तथा आध्यात्मिक अनेक आयोजनाएँ होती हैं। उसके लिए कदम से कदम मिलाकर चलने से ही सुंदर निष्पत्ति आती है।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने सीढ़ियाँ दी और आप जिस शीघ्रता से आरोहण कर रहे हैं, वह वर्तमान युग की आवश्यकता है। सम्मान सौहार्द और गुणग्राहकता से हर कार्य संभव है, प्रेम असंभव को भी संभव कर देता है।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता अभातेयुप के कार्यसमिति सदस्य पवन मांडोत ने कार्यशाला के विषय पर सरल भाषा में बताया कि युवा अपने जीवन में लगन, मेहनत एवं लक्ष्य के साथ 'मिलकर कदम बढ़ाएँ' तो निश्चित ही सफलता के शिखर छू सकता हैं, प्रगति के पायदान चढ़ सकता है। तेयुप विजयनगर के अध्यक्ष अमित दक ने अपने विचार रखे। इस कार्यशाला में अभातेयुप के तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी, डॉ० आलोक छाजेड़, संजय बैद, तेयुप राजराजेश्वरी नगर के निवर्तमान अध्यक्ष नरेश बांठिया, पूर्व अध्यक्ष गुलाब बांठिया, परामर्शक राजेश भंसाली, राजेश छाजेड़, विकास दुगड़ साथ-साथ तेयुप विजयनगर की नवगठित टीम भी उपस्थित रही। कार्यशाला का संचालन परिषद कोषाध्यक्ष देवेंद्र नाहटा ने किया एवं आभार ज्ञापन सहमंत्री बरुण पटावरी ने किया।

चातुर्मासिक प्रवेश

वडोदरा।

साध्वी सम्यक्प्रभा जी आदि का तेरापंथ भवन में मंगल प्रवेश हुआ। साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने नवकार मंत्र के उच्चारण के पश्चात समाज भवन में एक रूम का अनावरण सुश्राविका स्व० कैलाशदेवी समदरिया एवं उनके सुपुत्र स्व० महेशचंद्र के परिवार द्वारा साध्वीश्री के मंगलपाठ एवं आशीर्वचन से किया गया।

सभाध्यक्ष हस्तीमल मेहता ने सर्वप्रथम चातुर्मास की महती कृपा पर आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं साध्वीवृंद का स्वागत-अभिनंदन किया। महिला मंडल के मंगलाचरण के साथ तेयुप अध्यक्ष पंकज बोलिया, महिला मंडल अध्यक्षा उपासिका गीता देवी श्रीमाल, टीपीएफ के प्रमुख राजेंद्र पारख, अभातेयुप सदस्य एवं अणव्रत समिति अध्यक्ष दीपक श्रीमाल, सभा मंत्री गणपत बिनायकिया, ममं मंत्री सीमा डूंगरवाल सभी ने स्वागत-अभिनंदन एवं चातुर्मास को सफल बनाने की बात कही। कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला की डांस एवं नाटिका की स्वागत प्रस्तुति ने सभी को मोहित कर दिया।

साध्वी मलयप्रभा जी ने कहा कि सभी को घर बैठे आई गंगा में अपनी आत्मा को उज्ज्वल बनाएँ। साध्वी सम्यक्प्रभा जी ने सभी को आश्वासित करते हुए कहा कि यह स्वागत हमारा नहीं, परंतु तेरापंथ धर्मसंघ के सरताज आचार्यप्रवर का है। कार्यक्रम का संचालन सभा संयोजक एवं जेटीएन, वडोदरा प्रतिनिधि भंवरराज बडोला ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी, अशोक मालू के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। तेयुप कार्यकर्ता रोहित बैद सहयोगी के रूप में उपस्थित थे।

इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ श्रावकों की उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

पाणिग्रहण संस्कार

जयपुर।

रेणु-संजय भादानी के सुपुत्र सिद्धार्थ भादानी का पाणिग्रहण संस्कार शालिनी-हेमंत कुमार सेठिया की सुपुत्री सत्यश्री सेठिया के साथ संपन्न करवाया गया।

ह्री संस्कारक राजेंद्र बांठिया, ह्री संस्कारक राजेश जैन धाड़ेवा, धी संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने विवाह के सभी विधि-विधान मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाए। भादानी और सेठिया परिवार ने तेयुप, जयपुर के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नूतन गृह प्रवेश

बालोतरा।

बालोतरा निवासी मुकेश कुमार-राणी देवी बाफना का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित किया गया। जैन संस्कारक पुष्पाराज कोठारी ओर रोशन बागरेचा ने कार्यक्रम का संपादन किया।

तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, मंत्री नवीन सालेचा ने मंगलभावना पत्रक परिवार जनों को भेंट कर नूतन गृह प्रवेश की बधाई दी।

नूतन गृह प्रवेश

बालोतरा।

बालोतरा निवासी रतन कुमार-विद्या देवी बाफना का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित किया गया। जैन संस्कारक पुष्पराज कोठारी और रोशन बागरेचा ने कार्यक्रम का संपादन किया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से हुई।

तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल और मंत्री नवीन सालेचा ने मंगलभावना पत्रक परिवारजनों को भेंट किया।

शपथ ग्रहण समारोह

सूरत।

साध्वी लब्धिश्री जी एवं समणी निर्देशिका अक्षयप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा की नवगठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। नवमनोनीत अध्यक्ष हरिशचंद्र जैन, उनकी टीम एवं कार्यकारिणी ने शपथ ली। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण में सभा कार्यकारिणी द्वारा गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयेश मेहता ने किया। नवमनोनीत सभा अध्यक्ष हरीश जैन ने सभा के नवमनोनीत पदाधिकारी व संपूर्ण कार्यकारिणी की घोषणा की।

निवर्तमान सभा अध्यक्ष किशोर धारीवाल ने संपूर्ण टीम को शपथ दिलाई। इस अवसर पर सूरत सभा प्रभारी अनिल चंडालिया, सूरत सभा के सह-मैनेजिंग ट्रस्टी प्रकाश पोरवाल, तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना, महिला मंडल अध्यक्षा राखी बैद, अणुव्रत समिति ग्रेटर उपाध्यक्ष राकेश चोरड़िया ने सभा टीम को बधाई प्रेषित की। समणी प्रवणप्रज्ञा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता को विनम्रता और जागरूकता के साथ अपने दायित्व को बखूबी निभाना चाहिए। साध्वी श्री जी ने मधुर गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम में नवगठित तेममं व तेयुप का भी शपथ ग्रहण हुआ। तेयुप के नवमनोनीत अध्यक्ष गौतम बाफना व उनकी पूरी टीम एवं तेममं की नवमनोनीत अध्यक्ष राखी बैद व उनकी पूरी टीम को भी शपथ दिलवाई गई। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री नरपत कोचर, तेयुप मंत्री अभिनंदन गादिया व महिला मंडल निवर्तमान मंत्री पूर्णिमा गादिया ने किया।

✦ *व्यक्ति यह सोचे कि मेरा मित्र कल्याणमित्र है या नहीं? मात्र टाइम पास करने के लिए किसी को अपना मित्र बनाना बड़ी बात नहीं है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

जैन विश्व भारती

विधिवत उनकी साधना, शिक्षण और प्रयोग।
विश्व भारती में सतत चलता सहज सुयोग।।

प्रश्न : शिक्षा पद्धति में जीवन-विज्ञान की रूपरेखा क्या है?

उत्तर : जीवन-विज्ञान की कल्पना का आधार है—जीवन का सर्वांगीण विकास। इसमें जीवन के सामान्य व्यवहार से लेकर, चैतन्य-विकास तक कई पड़ाव हैं। उन सारे पड़ावों को पार करने के बाद मंजिल उपलब्ध होती है, जो व्यक्ति को जीवन-विज्ञान के रहस्यों से परिचित कराती है। इसमें केवल मस्तिष्कीय विकास पर ही ध्यान केंद्रित नहीं है। इसकी पहुँच मस्तिष्कीय विद्याओं से परे चेतना के विकास तक है। उसके लिए मूलभूत तत्त्व है—शारीरिक संस्थान से परिचय। परिचय के बाद शरीर में स्थित विशिष्ट चैतन्य-केंद्रों के निर्मलीकरण की अपेक्षा है। शरीर-तंत्र का परिचय शरीर शास्त्र से भी हो सकता है, पर उसकी पद्धति भिन्न है। वह शारीरिक क्रिया तक ही सीमित रहता है। शरीर शास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन करने वाला विद्यार्थी शरीर के आध्यात्मिक उपयोग से अपरिचित रहता है। जब तक शरीर के प्रति आध्यात्मिक दृष्टि निर्मित नहीं होती है, शरीर-स्थित चैतन्य-केंद्रों के निर्मलीकरण की प्रक्रिया ज्ञात नहीं हो सकती। जीवन-विज्ञान की कल्पना में इस विषय का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था सोची गई है।

कोई भी प्रकाश, परदे के हटाए बिना प्रकाश नहीं बन सकता। चेतना की अभिव्यक्ति में भी नाड़ी-संस्थान की विशुद्धि या चैतन्य-केंद्रों की निर्मलता निमित्त बनती है। ऐसा हुए बिना, उन्हें विद्युत चुंबकीय क्षेत्र बनाए बिना भीतर का ज्ञान बाहर नहीं जा सकता। निर्मलता चुंबकीय क्षेत्र है। इससे चेतना अधिक प्रकाशित होती है। जीवन-विज्ञान की प्रक्रिया ध्यान-साधना की प्रक्रिया है। इस दृष्टि से ध्यान शिक्षा का अनिवार्य अंग है। ध्यान के बिना न तो व्यक्तित्व की परिभाषा ज्ञात हो सकती है और न ही व्यक्तित्व-निर्माण के सूत्र हाथ लग सकते हैं।

अस्तित्व की जिज्ञासा

जिज्ञासा अस्तित्व की है पहला सोपान।
हर साधक पहले करे कोऽहं की पहचान।।
कोऽहं कोऽहं में सदा, रहे हृदय बेचैन।
मिले साधना-पथ स्वयं, बेचैनी की देन।।
पथ मिलने के बाद है, यम-नियमों का मूल्य।
बीज-वपन से पूर्व भू-समीकरण के तुल्य।।

प्रश्न : सर्वांगीण विकास करने के लिए व्यक्ति को अंतर्मुखी बनना जरूरी है। अंतर्मुखी के लिए ध्यान की साधना पर बल दिया जाता है। ध्यान-साधकों के अनुभव विभिन्न प्रकार के होते हैं। कुछ साधक बहुत शीघ्र ही अच्छी स्थिति में पहुँच जाते हैं और कुछ साधक बीच में ही भटक जाते हैं। इस भटकन से बचने के लिए साधक को अपनी साधना का प्रारंभ कहाँ से करना चाहिए?

उत्तर : साधना करने की भावना होने पर भी बहुत लोग यह नहीं समझ पाते कि साधना का प्रारंभ कब हो? और कहाँ हो? जब तक साधना का आदि बिंदु हाथ नहीं लगता, तब तक उस क्षेत्र में व्यवस्थित गति नहीं हो सकती। व्यवस्था की दृष्टि से आवश्यक है कि उस संबंध में गहरा ज्ञान हो। ध्यान की दिशा में गति करनी है तो ध्यान के स्वरूप की जानकारी भी कर लेनी चाहिए। ध्यान का अर्थ है एकाग्रता, किंतु केवल एकाग्रता ध्यान का विषय नहीं है। ध्यान के क्षेत्र में एकाग्रता किस विषय की हो? इस तथ्य का बहुत मूल्य है।

एकाग्रता एक निशानेबाज की भी होती है। कोई भी व्याध या शिकारी अपने शिकार पर निशाना साधता है, तब उसे कितना एकाग्र होना पड़ता है। एकाग्र हुए बिना किसी भी निशानेबाज का तीर अपने लक्ष्य को नहीं वेध सकता। बगुले की बकवृत्ति बहुत प्रसिद्ध है। वह मछली पकड़ने के इरादे से अपने एक पाँव को ऊपर उठाकर किसी तपस्वी की भाँति खड़ा होता है। बगुले की उस एकाग्रता से प्रभावित होकर मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम ने लक्ष्मण को संबोधित कर कहा—

पश्य लक्ष्मण! पम्पायां बकः परमधार्मिकः।
मन्दं-मन्दं पदं धत्ते जीवानां वधशंकया।।

लक्ष्मण! देखो, इस पम्पा में रहने वाला बगुला भी कितना धार्मिक है। यह जीव-वध की आशंका से कितना संभल-संभलकर कदम टिका रहा है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(९)

युग की हर उम्मीद नई हर सपना अभिनव
अनिमिष पलकों से तुमको दिन-रात निहारे
हुआ नाम से ही जादू सारी दुनिया पर
क्या होगा जब देखेगा जग काम तुम्हारे।।

तुमको देखा एक बार वह हुआ तुम्हारा
सदा निकट रहने की जागी चाह सलोनी
पहुँच नहीं पाया जो अब तक द्वार तुम्हारे
इच्छाएँ उस मानव की सब रही अलोनी
उजल गई यह सदी तुम्हारी अभिधा से जुड़
टाँके हैं तुमने इस नभ में नए सितारे।।

मानवता का मीत न तुम-सा देखा हमने
उसके खातिर ही अणुव्रत का दीप जलाया
एक प्यास ले गई तुम्हें सागर के तट तक
बदले युग की धारा यह उद्घोष सुनाया
धर्मक्रांति की लहर अनूठी ले आए तुम
साँसों का संगीत निरंतर तुम्हें पुकारे।।

नई सदी की चौखट पर संसार खड़ा है
मनोभूमि पर बीज निराशा के अँखुआए
उठी आंधियाँ हिंसा की सब ओर भयावह
कौन अहिंसा की सुंदर-सी राग सुनाए
आशा आश्वासन विश्वास दिलासा हो तुम
इस निरीह मानवता के अब तुम्हीं सहारे।।

नैतिकता हो रही चेतनाशून्य जहाँ में
सूरज बन तुम उदियाए तब मूर्च्छा टूटी
बनी तनावों से बोझिल मासूम जिंदगी
दी तुमने उसको प्रेक्षा संजीवनी-बूटी
नए शिल्प में ढाल सत्य को किया उजागर
तुम्हें देखकर पुलक उठे हैं प्राण हमारे।।

(१०)

आस्था के मंगल दीप जला
साँसों की सरगम पर गाएँ
भावों की वंदनवार सजा
मानस-मंदिर को महकाएँ।।

तुम चित्रकार हो अलबेले
हम चित्र तुम्हारे हाथों के
क्यों असर पड़े कब ही उन पर
वर्षा आतप आघातों के
ये चरण रहें नित गमन-निरत
बन धूलि पंथ में बिछ जाएँ।।

तुम कल्पवृक्ष इस मरुधर में
मानव की चाह सनाथ हुई
इसकी छाया में आते ही
अंधियारी रात प्रभात हुई
तुम क्षीर-समंदर लहराते
बन सिन्धु स्वयं तुमको पाएँ।।

तुम पारस हो इस दुनिया में
पा परस अयस बनता कंचन
तुम सूरज बनकर आंज रहे
आँखों में किरणों का अंजन
तुम शशधर हो निर्मल नभ में
हम नखत सभी दाएँ-बाएँ।।

(क्रमशः)

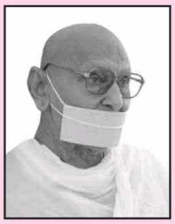

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

क्रिया-अक्रियावाद

(१४) एवं शिक्षासमापन्नो, गृहवासे ऽपि सुव्रतः।
अमेध्यं देहमुज्झित्वा, देवलोकं च गच्छति।।

इस प्रकार शिक्षा से संपन्न सुव्रती मनुष्य गृहवास में भी अशुचि शरीर को छोड़कर देवलोक में जाता है।

(१५) दीर्घायुष ऋद्धिमन्तः, समृद्धाः कामरूपिणः।
अधुनोत्पन्नसंकाशाः, अर्चिमालिसमप्रभाः।।

(१६) देवा दिवि भवन्त्येते, धर्मं स्पृशान्ति ये जनाः।
अगारिणोऽनगारा वा, संयमस्तत्र कारणम्।। *(युग्मम्)*

जो गृहस्थ या साधु धर्म की आराधना करते हैं, वे स्वर्ग में दीर्घायु, ऋद्धिमान्, समृद्ध, इच्छानुसार रूप धारण करने वाले, अभी उत्पन्न हुए हों—ऐसी कांति वाले और सूर्य के जैसी दीप्ति वाले देव होते हैं। उसका कारण संयम है।

संयम का मुख्य फल है—कर्म-निर्जरण, आत्म पवित्रता। उसका गौण फल है—देवलोक आदि की प्राप्ति।

संयम आत्म-जागरण है। उसके आत्म-गुणों का उपबृंहण होता है। आत्मा के मूल गुण हैं—अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, सहज आनंद आदि-आदि संयम इन सबकी प्राप्ति का साधन है।

देवलोक आदि पौद्गलिक स्थितियों की प्राप्ति उसका सहचारी फल है। प्रस्तुत श्लोकों में उसी का प्रतिपादन है।

(१७) सर्वथा संवृतो भिक्षुः, द्वयोरन्यतरो भवेत्।
कृत्स्नकर्मक्षयान्मुक्तो, देवो वापि महर्द्धिकः।।

जो भिक्षु सर्वथा संवृत है—कर्म-आगमन के हेतुओं का निरोध किए हुए है, वह इन दोनों में से किसी एक अवस्था को प्राप्त होता है—सब कर्मों का क्षय हो जाए तो वह मुक्त हो जाता है, अन्यथा समृद्धिशाली देव बनता है।

कारण के बिना कार्य की उपलब्धि नहीं होती। परिदृश्यमान जगत् कार्य है तो निस्संदेह उसका अदृश्य कारण भी होना चाहिए। तृष्णा, वासना या कर्म कारण है। कारण की परंपरा का निर्मूलन करना साधना का वास्तविक ध्येय है। कर्म से प्रवृत्ति-चंचलता पैदा होती है और चंचलता से पुनः कर्म का सृजन होता है। कर्म का यह क्रम टूटता नहीं हैं साधना उस क्रम को तोड़ने का शस्त्र है। साधक की साधना यदि प्रवृत्तिशून्यता की चरम सीमा का स्पर्श कर लेती है तो वह अयोगी (प्रवृत्ति-मुक्त) सर्व दुःखों से मुक्त हो जाता है। यदि प्रवृत्ति का क्रम पूर्णतया निरुद्ध नहीं हुआ है तो पुनः जन्म लेना उसके लिए अनिवार्य है। किंतु इस बीच वह अपने असीम पुण्य-बल से एक बार स्वर्ग में जन्म ले पुनः वहाँ से मनुष्य जीवन में अवतरित होता है। साधना का पुनः अवसर प्राप्त कर जीवन के सर्वोच्च विकास-शिखर को छू लेता है।

गीता में वर्णित योग-भ्रष्ट व्यक्ति के साथ इसका यत् किंचित् सामंजस्य किया जा सकता है।

योग-भ्रष्ट शब्द का अभिप्राय यह हो कि वह योग-मार्ग को पूर्णतया साध नहीं सका, तो यहाँ कोई भिन्नता जैसी बात नहीं रहती। यदि इसका अर्थ—योग-मार्ग से च्युत हो या बीच में ही छोड़ दिया हो तो फिर दूसरी बात है। किंतु आगे के वर्णन से स्पष्ट है कि वह व्यक्ति किसी योनि में योग-कुल में आकर जन्म ग्रहण करता है और अपने अवशेष योग की साधना में संलग्न होकर उसे परिपूर्णतया साध लेता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-१० : क्या सम्यक्त्वी चारों गतियों में होते हैं?
उत्तर : चार ही गतियों में चार सम्यक्त्व वाले जीव होते हैं, वेदक को छोड़कर। वेदक सम्यक्त्व प्राप्त जीव केवल मनुष्य गति में ही होते हैं।

प्रश्न-११ : क्या सम्यक्त्व का उच्छेद (समाप्ति) हो सकता है?
उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्व का उच्छेद कभी नहीं होता। शेष चार सम्यक्त्व का उच्छेद हो सकता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य भद्रबाहु (प्रथम)

आचार्य भद्रबाहु की साधना का काल संपन्नप्रायः था। उस समय एक दिन आचार्य भद्रबाहु ने प्रथम बार स्थूलभद्र से कहा—'विनेय! तुम्हें माधुकरी प्रवृत्ति एवं स्वाध्याय योग में किसी प्रकार का क्लेश तो नहीं होता?'

आर्य स्थूलभद्र विनम्र होकर बोले—'भगवन्! मुझे अपनी प्रवृत्ति में कोई कठिनाई नहीं है। मैं पूर्ण स्वस्थमना अध्ययन में रत हूँ। आपसे मैं एक प्रश्न पूछता हूँ—मैंने आठ वर्षों में कितना अध्ययन किया और कितना अवशिष्ट रहा है?'

प्रश्न के समाधान में भद्रबाहु ने कहा—'मुने! सर्षप मात्र ग्रहण किया है, मेरु जितना ज्ञान अवशिष्ट है। दृष्टिवाद के अगाध ज्ञानसागर से अभी तक बिंदु मात्र ले पाए हो।'

आर्य स्थूलभद्र ने निवेदन किया—'प्रभो! मैं अगाध ज्ञान की सूचना पाकर हतोत्साहित नहीं हूँ, पर मुझे वाचना अल्प मात्र में मिल रही है। आपके जीवन का संध्याकाल है। ऐसी स्थिति में इतने कम समय में मेरु जितना ज्ञान कैसे ग्रहण कर पाऊँगा?'

बुद्धिमान आर्य स्थूलभद्र की चिंता का निमित्त जान आर्य भद्रबाहु ने आश्वासन दिया—'शिष्य! चिंता मत करो, मेरा साधनाकाल संपन्नप्रायः है। उसके बाद मैं तुम्हें रात-दिन यथेष्ट समय वाचना के लिए दूँगा।'

आर्य स्थूलभद्र का अध्ययन क्रम चलता रहा। भद्रबाहु की महाप्राण ध्यान की साधना पूर्ण होने तक उन्होंने दो वस्तु कम दशपूर्व की वाचना ग्रहण कर ली थी। ध्यान-साधना का काल संपन्न होने पर आर्य भद्रबाहु पाटलिपुत्र लौटे। यक्षा आदि साध्वियाँ आर्य भद्रबाहु के वंदनार्थ आईं। आर्य स्थूलभद्र उस समय एकांत में ध्यानरत थे। परमवंदनीय महाभाग आचार्य भद्रबाहु के पास अपने ज्येष्ठ भ्राता मुनि आर्य स्थूलभद्र को न देख साध्वियों ने उनसे पूछा—'गुरुदेव! हमारे ज्येष्ठ भ्राता मुनि आर्य स्थूलभद्र कहाँ हैं?' भद्रबाहु ने स्थान विशेष का निर्देश दिया। यक्षा आदि साध्वियाँ वहाँ पहुँची। बहनों का आगमन जान आर्य स्थूलभद्र कुतूहलवश अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए सिंह का रूप बनाकर बैठ गए। साध्वियाँ शेर को देखकर डर गईं। वे आचार्य भद्रबाहु के पास तीव्र गति से चलकर पहुँची और प्रकंपित स्वर में बोली—'गुरुदेव! आपने जिस स्थान का संकेत दिया था, वहाँ केसरीसिंह बैठा है। लगता है, हमारे भाई का उसने भक्षण कर लिया है।' भद्रबाहु ने समग्र स्थिति को ज्ञानोपयोग से जाना और कहा—

'वन्दध्वं तत्र वः सोऽस्ति ज्येष्ठार्यो न तु केसरी।'

'वह केसरी नहीं तुम्हारा भाई है। पुनः वहीं जाओ। तुम्हें तुम्हारा भाई मिलेगा। उसे वंदन करो।'

आचार्य भद्रबाहु द्वारा निर्देश प्राप्त कर बहनें पुनः उसी स्थान पर गईं। ज्येष्ठ बंधु स्थूलभद्र को देखकर उन्हें प्रसन्नता हुई। सबने मुकुलित पाणि मस्तक झुकाकर वंदन किया और बोली—'भ्रात! हम पहले भी यहाँ आई थीं, परंतु आप नहीं थे। यहाँ पर केसरीसिंह बैठा था।' आर्य स्थूलभद्र ने उत्तर दिया—'साध्वियो! मैंने ही उस समय सिंह का रूप धारण किया था।'

आर्य स्थूलभद्र एवं यक्षा, यक्षदत्ता आदि साध्वियों का कुछ समय तक वार्तालाप चला। तदनंतर यक्षा आदि साध्वियाँ अपने स्थान पर लौट आईं। आर्य स्थूलभद्र वाचना ग्रहण के लिए आचार्य भद्रबाहु के चरणों में उपस्थित हुए। अपने सम्मुख आर्य स्थूलभद्र को देखकर आचार्य भद्रबाहु ने उनसे कहा—'वत्स! ज्ञान का अहं विकास में बाधक है। तुमने शक्ति का प्रदर्शन कर अपने को ज्ञान के लिए अपात्र सिद्ध कर दिया है। अग्रिम वाचना के लिए अब तुम योग्य नहीं रहे हो।' आर्य भद्रबाहु द्वारा वाचना न मिलने पर उन्हें अपनी भूल समझ में आई। प्रमाद वृत्ति का गहरा अनुताप हुआ। भद्रबाहु के चरणों में गिरकर उन्होंने क्षमायाचना की और कहा—'मेरी पहली भूल है। इस प्रकार की भूल का पुनरावर्तन नहीं होगा। आप मेरी भूल को क्षमा कर मुझे वाचना प्रदान करें।'

पर आचार्य भद्रबाहु ने उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की।

(क्रमशः)

✦ भौतिक विकास के बिना नगर, प्रांत और राष्ट्र परिपूर्ण विकास वाला नहीं बन सकता।

—आचार्यश्री महाश्रमण

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

विवेक विहार, दिल्ली।

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी का भारत भूषण सिंघल के निवास से विहार कर ओसवाल भवन, विवेक विहार, शाहदरा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। जुलूस के माध्यम से साध्वीश्री जी का मंगल प्रवेश का कार्यक्रम संनन्न हुआ।

तेयुप, दिल्ली के विकास बोथरा, संगठन मंत्री मयंक दुगड़, क्षेत्रीय संयोजक पवन पारख व अमित मिन्नी सहित निकटवर्ती क्षेत्र से तेयुप, दिल्ली के कार्यकर्ताओं ने चातुर्मासिक मंगल प्रवेश में सहभागिता रखी।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

शालीमार बाग, दिल्ली।

बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश गोयल आस्था भवन, शालीमार बाग, दिल्ली में जुलूस के साथ हुआ। साध्वीश्री जी के गोयल आस्था भवन में प्रवेश के साथ ही चातुर्मासिक कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। कल्याण मित्र गोयल परिवार के वरिष्ठ सदस्य बिरधीचंद गोयल सपरिवार विशेष रूप से कोलकाता से साध्वीश्री जी की अगवानी में पधारे।

कार्यक्रम में दिल्ली की सभी सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकर्ता शामिल हुए। तेरापंथी सभा, दिल्ली, उत्तर मध्य सभा, शास्त्रीनगर, मानसरोवर, पीतमपुरा, पश्चिम विहार सभा, तेयुप, तेममं, अणुव्रत न्यास, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल, ज्ञानशाला, सृजन आदि के पदाधिकारी भी शामिल हुए।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

कृष्णा नगर, दिल्ली।

शासनश्री साध्वी रविप्रभा जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश फतेहचंद सुराणा के निवास स्थान से तेरापंथ भवन (विकास मंच), कृष्णा नगर में एक जुलूस के रूप में हुआ।

शाहदरा एवं गांधीनगर, कृष्णा नगर क्षेत्र की अनेक संस्थाओं के वरिष्ठ पदाधिकारियों सहित अनेक गणमान्य श्रावक समाज ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। तेयुप, दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष व दिल्ली सभा के मंत्री संजय संचेती एवं तेयुप कोषाध्यक्ष पवन श्यामसुखा, सहमंत्री अशोक सिंघी, संयोजक गौरव मणोत सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक मंगल प्रवेश यात्रा में अपनी सहभागिता दर्ज की।

स्वागत व्यक्ति का नहीं उसके त्याग और संयम का

बिलीमोरा।

मुनि आलोक कुमार जी, मुनि हिमकुमार जी एवं मुनि लक्ष्यकुमार जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर मुनि आलोक कुमार जी ने कहा कि यह स्वागत न तो मेरा और न ही इन दोनों संतों का, बल्कि यह स्वागत त्याग का है, संयम का है, अध्यात्म का है। आप सभी श्रावकों के जीवन में भी त्याग का, संयम का, अहिंसा का विकास हो।

परमपूज्य गुरुदेव ने महती कृपा करके केवल २ घरों में चातुर्मास प्रदान कराया। खासकर मुनिश्री हिमकुमार जी की संसारपक्षीय माँ कमलादेवी राणमल भंसाली की सेवा के लिए चातुर्मास फरमाया लेकिन अब माँ तो नहीं रहे फिर भी पूरा भंसाली परिवार सेवा करने हेतु उत्साहित है। साथ ही यहाँ दिवेर के अशोक कटारिया का भी एक परिवार है, वे भी निष्ठा से सेवा कर रहे हैं।

इस अवसर पर मुनि हिमकुमार जी ने कहा कि पूरे चार महीने सभी अधिक से अधिक लाभ लें एवं आत्मशुद्धि, भावशुद्धि का विकास करें।

मुनि लक्ष्यकुमार जी ने सभी श्रावकों को व्हाइट हॉउस में प्रवेश करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन रेखा श्रीश्रीमाल और मिनल बाफना ने किया। विशेषकर स्थानकवासी समाज ने स्थानक देने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

आत्म रमण का पर्व है चातुर्मास का समय

पालनपुर।

डॉ० मुनि मदनकुमार जी, मुनि सिद्धार्थ कुमार जी का चातुर्मासिक प्रवेश तेरापंथ भवन, पालनपुर में हुआ। डॉ० मुनि मदन कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। मंगलाचरण रिद्धि पारख ने किया।

सभाध्यक्ष विनोद भाई पारख ने स्वागत अभिनंदन वक्तव्य दिया, महिला मंडल व कन्या मंडल ने सुमधुर स्वागत गीतिका प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों को प्रोत्साहित किया गया।

डॉ० मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि चातुर्मास का यह समय आत्मा रमण का विशेष पर्व है, सभी श्रावक-श्राविका इस चातुर्मास में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की साधना करते हुए अपनी आत्मा को पवित्र बनाने का लक्ष्य बनाएँ।

मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने कहा कि गुरुदेव की कृपा से उनकी ऊर्जा से उनकी शक्ति से हमें कई क्षेत्रों में जाने का मौका मिला, तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविका श्रद्धालु हैं, संघ और संघपति के प्रति समर्पित हैं, जागरूक हैं। मुनिश्री ने कहा कि सुसंस्कार हमें मिले हैं, वो वर्धमान बनें, प्रभु वीर के इस पथ पर हम अपनी आत्मा का कल्याण कर लक्षित मंजिल को प्राप्त करें। आभार ज्ञापन सुभाष खटेड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन किरीट पारीख ने किया।

आत्म कल्याण का समय - चातुर्मास

विजयनगरम्।

मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी का चातुर्मास प्रवेश महावीर जैन भवन में हुआ। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि चातुर्मास का समय आध्यात्मिक साधना-आराधना का समय होता है। चार ही तीर्थ ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की विशेष साधना कर कर्म निर्जरा करते हैं। चार माह का समय अपने आत्मविशुद्धि करने मन एवं भावों को पवित्र करने का है।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आज विजयनगरम् में चातुर्मास के लिए मंगल प्रवेश हुआ है। जब क्षेत्र में साधु-साध्वी का आगमन तब सहज ही धार्मिक उत्साह, उमंग का वातावरण बन जाता है। संतों का आना ही मंगलमय होता है। संतों के आने से जीवन में बहार आ जाती है। इस चातुर्मास का लक्ष्य लाभ लेना है। जीवन में परिवर्तन लाना है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि चातुर्मास किसी व्यक्ति या संस्था का नहीं संपूर्ण श्रावक समाज का है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की विशेष साधना करनी है। मुनि विमलेश कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर का जीवन समता का जीवन दर्शन है। समता हमारी साधना का सार है। अपने क्रोध को उपशांत कर शांति का जीवन जीना है। चातुर्मास में समत्व का भाव बढ़ाने के साथ अपने अहं को भी छोड़ने का सलक्ष्य प्रयास करना है। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। महासभा के क्षेत्रीय प्रभारी विमल कुंडलिया, सभा अध्यक्ष प्रवीण आंचलिया, तेरापंथ सभा, विशाखापट्टनम के अध्यक्ष मनोज दुगड़, मूर्तिपूजक समाज से वसंत कोठारी, स्थानकवासी समाज से शांतिलाल पोखरना, दिगंबर समाज से राजेंद्र कुमार जैन, महिला मंडल विशाखापट्टनम के मंत्री जयश्री लालवाणी ने विचार व्यक्त किए। तेयुप, चोपड़ा परिवार, तेममं, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, ज्ञानशाला प्रशिक्षक ने गीत के माध्यम से मुनिवृंद का स्वागत किया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री संजीव श्यामसुखा ने किया। कार्यक्रम का संयोजन बाबूलाल चिंडालिया ने किया।

कर्मों की निर्जरा का समय - चातुर्मास

पूर्वांचल-कोलकाता।

साध्वी स्वर्णरेखा जी ने अपनी सहवर्तिनी साध्वीवृंद के साथ पूर्वांचल सभा भवन तुलसी वाटिका में सॉल्ट लेक के चातुर्मासिक स्थल गुप्ता भवन में चातुमासिक प्रवेश किया। सॉल्ट लेक प्रवेश द्वार पर सभाध्यक्ष नगराज बरमेचा, मंत्री विनोद संचेती सहित पदाधिकारियों और अनेक श्रावकों ने साध्वीश्री जी का स्वागत किया।

प्रवेश उपरांत पूर्वांचल सभा, सॉल्ट लेक सभा, पूर्वांचल महिला मंडल द्वारा सामुहिक गीतिका द्वारा साध्वीश्री जी का स्वागत किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि इस चातुर्मास में हम सबको धर्मोपासना का ज्यादा से ज्यादा लाभ लेना है और अपने कर्मों की निर्जरा करनी है। रास्ते की सेवा में सभा-संस्थाओं के अनेक पदाधिकारीगण एवं श्रावकगण उपस्थित थे।

साधु की संगति से होता है पाप कर्मों का नाश

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी, शासनश्री साध्वी मंजूरेखा जी एवं सहवर्तिनी साध्वीवृंद का चातुर्मास प्रवास हेतु तेरापंथ भवन में मंगल प्रवेश हुआ। तेरापंथ सभा/ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोज डागा के मार्गदर्शन में श्रावक समाज ने साध्वीवृंद की अगवानी की। लहराते जैन ध्वज के साथ अहिंसा रैली तथा गगनभेदी जयकारों से साध्वीवृंद का तेरापंथ भवन में प्रवेश हुआ। सर्वप्रथम शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। कन्या मंडल की बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। सभाध्यक्ष मनोज डागा ने श्रावक समाज का स्वागत किया एवं साध्वीश्री जी का चातुर्मास ऐतिहासिक हो ऐसी मंगलकामना की। तेरापंथ सभा एवं तेयुप के साथियों ने सामुहिक स्वागत गीतिका की प्रस्तुति दी।

साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान धर्मसंघ है। एक गुरु की आज्ञा, अनुशासन और मर्यादा के द्वारा इस संघ की दुनिया में अलग ही पहचान है।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि साधु जंगम तीर्थ होते हैं। साधु की संगति से पाप कर्मों का नाश होता है।

साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी एवं साध्वी चेलनाश्री जी द्वारा गीतिका के माध्यम से चातुर्मास काल में ज्यादा से ज्यादा त्याग, तपस्या व धर्माराधना करने की प्रेरणा दी गई।

तेयुप अध्यक्ष नरेश बांठिया, महिला मंडल अध्यक्षा सरोज बैद, विजयनगर सभा अध्यक्ष राजेश चावत, राजाजीनगर सभा अध्यक्ष शांतिलाल पितलिया सहित सभा-संस्थाओं के अनेक पदाधिकारियों ने सामुहिक स्वागत गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विक्रम महेर ने किया। आभार ज्ञापन सभा के सहमंत्री राजेश भंसाली ने किया।

जहाँ गुरु की दृष्टि वहाँ सुख की सृष्टि

गांधीनगर।

साध्वी लावण्यश्री जी का गांधीनगर, तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री लावण्यश्री जी ने कहा—मेरी जन्म भूमि, कर्म भूमि, दीक्षा भूमि में पाँच दशक बाद आना हुआ। जहाँ गुरु की दृष्टि वहाँ सुख की सृष्टि होती है।

इस अवसर पर साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी ने आगामी कार्यक्रमों एवं चातुर्मास में करणीय कार्यों की सूची एक गीत के माध्यम से दी।

समणी निर्देशिका भावितप्रज्ञा जी ने साध्वी लावण्यश्री जी की सहजता, सरलता एवं सेवाभावना की विशेष प्रशंसा की।

स्वागत तेरापंथ सभा, बैंगलोर के अध्यक्ष सुरेश दक, ट्रस्ट अध्यक्ष गौतम मूथा, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरना, तेयुप अध्यक्ष विनोद मूथा, टीपीएफ महामंत्री हिम्मत मांडोत, अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष देवराज रायसोनी आदि अनेक पदाधिकारीगणों ने मंगलकामना अभिव्यक्त की। मंगलाचरण ज्ञानशाला ने किया। तेयुप बैंगलोर भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा, महिला मंडल यशवंतपुर, प्रेक्षा संगीत सुधा ने गीतिका का संगान किया।

आभार सभा सहमंत्री राजेंद्र बैद ने व कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री नवनीत मूथा ने किया। व्यवस्था में माणक मूथा, संपत चावत, रूपचंद देसरला का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा।

जागृति का समय है चातुर्मास

इचलकरंजी।

साध्वी प्रज्ञाश्रीजी का पदार्पण बाह्य परिसर परसकर इचलकरंजी तेरापंथ भवन में हुआ। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। महिला मंडल द्वारा अष्टकम से मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष महावीर ने साध्वीश्री जी का एवं बाहर से पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया। महिला मंडल अध्यक्षा सीमा डागा ने साध्वीश्री जी का स्वागत किया। तेयुप के उपाध्यक्ष प्रवीण कांकरिया, जयसिंगपुर अध्यक्ष विजयराज रूणवाल, चेन्नई से समाहित महेंद्र मरलेचा, गोआ से पधारे विजयराज, कन्या मंडल, तेयुप, विनोद घोड़ावत आदि ने अपनी भावना प्रकट की। अभातेममं कार्यकारिणी और हाल ही में नव निर्वाचित अध्यक्ष जयश्री जोगड़ ने स्वागत करते हुए कार्यकारिणी की घोषणा की। विकास सुराणा ने स्वागत वक्तव्य के साथ शासनश्री विद्यावती जी 'द्वितीय' का प्राप्त संदेश सुनाया।

साध्वी विन्यप्रभा जी एवं साध्वी प्रतिकप्रभा जी ने गीतिका द्वारा प्रमोद भावना प्रकट की और चातुर्मास में जागृति की प्रेरणा दी।

साध्वी सरलप्रभा जी ने अपना उद्बोधन दिया। अग्रणी साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि गुरुदेव ने महाराष्ट्र की ओर विहार हेतु फरमाया, कुछ पता नहीं था कि चातुर्मास कहाँ होगा, लेकिन इचलकरंजी का श्रावक समाज निश्चिंत था कि चातुर्मास उन्हें ही मिलेगा और गुरुकृपा की उन पर बरसात हुई।

इस अवसर पर संतोष महावीर आंचलिया ने २४ की तपस्या की भेंट साध्वीश्री जी के चरणों में चढ़ाई। आभार ज्ञापन जवाहरलाल भंसाली ने किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री पुष्पराज संकलेचा ने किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस के विविध आयोजन

आचार्य भिक्षु का जीवन पवित्र पुस्तक के समान

डी०वी० कॉलोनी, सिकंदराबाद।

कार्यक्रम की शुरुआत दिलीप डागा के मंगल स्वर से हुआ। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का समस्त जीवन उस पवित्र पुस्तक के समान था जिसके प्रत्येक पृष्ठ की प्रत्येक पंक्ति प्रेरणादायक होती है। साध्वी मधुरयशा जी, साध्वी मार्दवयशा जी, नवनीत छाजेड़, तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा व टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

बाबूलाल बैद, संगीता गोलेच्छा, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गीड़िया। महिला मंडल ने सेवा, समर्पण, कला, अनुशासन पर शब्दचित्र प्रस्तुत किया। साध्वी धवलप्रभा जी, साध्वी श्वेतप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। ऋषभ दुगड़ ने नौ दिन की तपस्या की अनुमोदना में परिवार की बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। राजकुमार ने तप के महत्त्व को बताया। साध्वीवृंद ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीपत ने किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस

नालासोपारा (मुंबई)।

तेरापंथ स्थापना दिवस, गुरु पूर्णिमा एवं सामायिक कार्यक्रम मारू हॉल के प्रांगण में आयोजित हुआ। महिला मंडल से नीता कोठारी के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। विजय गीत का संगान तेयुप के पूर्व उपाध्यक्ष मुकेश मेहता, महेंद्र सोलंकी द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष मदन कोठारी द्वारा स्वागत भाषण किया गया। तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी, निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष पारस बाफना एवं अभातेयुप जेटीएन में विकास धाकड़ ने २६२वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर भावों की अभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल की बहनों द्वारा सुंदर गीतिका की प्रस्तुति दी। किशोर मंडल से विनय सोलंकी ने संगान किया। जिसमें प्रसिद्ध गायक हरीश लोढ़ा एवं नरेश मांडोत द्वारा मनमोहक प्रस्तुति दी। मिश्री मांडोत ने भिक्षु स्वामी का सुंदर चित्र बनाया।

कन्या मंडल संयोजिका अंकिता, दिव्या मेहता, शिखा चौहान, पूरी टीम द्वारा सामुहिक संगान किया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा सभी नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा सुंदर प्रस्तुति के लिए सभा द्वारा पारितोषिक प्रदान किए गए। निवर्तमान संयोजिका अंजु छाजेड़ एवं बहनों द्वारा संगान किया गया।

ज्ञानशाला वसई, एनएसपी, विरार जॉन की सह-संयोजका मानसी मेहता एवं महिला मंडल की पूर्व कोषाध्यक्ष रंजना सोलंकी द्वारा संगान किया गया। उपासिका बहन प्रेमा धाकड़ ने भिक्षु स्वामी के जीवन पर प्रकाश डाला। महिला मंडल संयोजिका दिव्या बाफना ने अपने भाव व्यक्त किए। किशोर मंडल से संयोजक राहुल मेहता एवं पूरी टीम द्वारा सुंदर संगान किया गया।

सभा संरक्षक मिश्रीमल चोरड़िया द्वारा भाव व्यक्त किए। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया। कार्यक्रम में अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण उपस्थित रहे।

जन-जन के उद्धारक थे आचार्य भिक्षु

विल्लुपुरम (तमिलनाडु)।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अंजली सुराणा के मंगलाचरण गीत से हुई। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ स्थापना दिवस एवं गुरु पूर्णिमा का यह दिन बहुत ही शुभ दिन है। तेरापंथ का उद्भव एवं नामकरण का कुछ विलक्षण संयोग बना, जो किया नहीं पर अपने आप हो गया। स्वामीजी ने आगमिक चर्या तथा सिद्धांतों को अपनाया और उसकी प्रेरणा जन-जन को दी।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने आराध्य के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा दी। स्थानीय कन्या मंडल, महिला मंडल एवं महिला मंडल अध्यक्षा राखी सुराणा द्वारा सुंदर गीतों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रबोधयशा जी ने किया।

विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे आचार्य भिक्षु

साहूकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ स्थापना दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। वे प्रखर तपोबली, अटल मनोबली, अतुल योगबली, अथाह आगम ज्ञानबली एवं प्रतिभा ज्ञानबली थे। उन्होंने अपनी विलक्षण मेधा से तेरापंथ की संख्या के आधार पर नहीं अपितु विलक्षण व्याख्या करते हुए कहा कि हे प्रभो! यह तेरापंथ। यह तुम्हारा पंथ है, हम तो मात्र इस पथ पर चलने वाले राही हैं। प्रभु के मार्ग पर चलने का संकल्प लेकर अरावली की घाटियों पर आरोहण किया।

साध्वीश्री जी ने कहा आचार्य भिक्षु का मतिबल, धृतिबल, संकल्पबल गजब का था। उनके धृतिबल ने तेरापंथ को नई पहचान दी। हमने आचार्य भिक्षु को अपने आराध्य के रूप में स्वीकार किया।

साध्वी सुधाप्रभा जी ने मंच संचालन किया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य के पुजारी थे। वे सत्य बनकर जीए एवं सत्य प्राप्ति ही उनकी साधना का ध्येय था। तेरापंथ सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, तेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विकास सेठिया, महिला मंडल से बसंता बाबेल ने श्रद्धासिक्त भावों से आचार्य भिक्षु की अभिवंदना की। राकेश मांडोत ने गीत का संगान किया। कन्या मंडल से भवी बाफना, हार्दिका मूथा, निवृत्ति जैन, देशना जैन, अक्षि बोहरा, खुशी मूथा, खुशी रांका ने मंगल संगान किया। सभा मंत्री गजेंद्र खाटेड़, तेयुप मंत्री संतोष सेठिया, महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी ने आगामी कार्यक्रमों की अवगति दी।

आचार्य भिक्षु का संयम अनुत्तर था

बोलाराम।

तेरापंथ स्थापना दिवस पर साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि आषाढ़ी पूर्णिमा का दिन भी पवित्र हो गया, क्योंकि इसके साथ गुरु शब्द जुड़ा हुआ है। गुरु का महत्त्व हर संप्रदाय में है। गुरु प्रकाशपुंज, शक्तिपुंज, ऊर्जा प्रदाता और तारणहार होते हैं। आज के दिन तेरापंथ को अध्यात्म गुरु मिले। ऐसे गुरु जो जीवन पर्यन्त सत्य के पुजारी बने रहे। भगवान महावीर के आगम वाक्यों को वे अपने जीवन का आधार मानते थे। आचार्य भिक्षु का संयम अनुत्तर था। उनकी त्यागमय साधना की निष्पत्ति है ये तेरापंथ।

साध्वी सुरभिप्रभा जी ने मधुर स्वरों से जनता को भावविभोर कर दिया। मंच संचालन करते हुए साध्वी ज्योतियशा जी ने कहा कि आत्मशुद्धि पर चलने वाले गुरु भिक्षु ने हमें सत्य की राह दिखाई। कष्टों में बढ़ते रहने का मार्ग प्रशस्त किया।

समारोह में तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने बोलाराम की पचरंगी सभा को देख प्रसन्नता व्यक्त की। सहमंत्री राकेश सुराणा ने भिक्षु कुर्बानी का स्मरण किया। संगठन मंत्री धर्मेन्द्र चोरड़िया, जैन सेवा संघ के कोषाध्यक्ष अशोक संचेती, बोलाराम सभा अध्यक्ष रतन सुराणा, रिसाला बाजार, सदर बाजार, रेतु बाजार, अलवल, लोधकुंटा आदि क्षेत्र के वरिष्ठ श्रावक-श्राविका समुदाय भी अच्छी संख्या में उपस्थित थे। अशोक संचेती और शेखर बैद ने तेले की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर कव्वाली से सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया। उपवास, एकासन, आयंबिल का भाई-बहनों ने सामुहिक रूप से त्याग किया।

तेरापंथ स्थापना दिवस पर धम्म जागरण

हैदराबाद।

तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु के पावन स्मरण में धम्म जागरण का आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी ने उद्बोधन में धर्म जागरण के महत्त्व को समझाया। साध्वीश्री जी ने आचार्य तुलसी के सान्निध्य में लाडनूं के ऐतिहासिक धम्म जागरण का स्मरण किया। कार्यक्रम में हैदराबाद तेरापंथी समाज के विशिष्ट गायक कलाकारों ने अपने संगीतमय भक्ति गीतों से पूरे वातावरण को भिक्षुमय बना दिया।

प्रख्यात भजन गायक दिलीप डागा के भजनों ने आचार्य भिक्षु के संघर्ष के दिनों की कठिनाइयों की प्रस्तुति दी। पिता-पुत्री की अद्वितीय गायक कलाकार जोड़ी राकेश तथा खुशी कठोतिया ने गीतों से समा बांधा। जगत पारख ने तीर्थंकर अजितनाथ के स्तवन की संगीतमय प्रस्तुति दी। मोनिका तथा सुरभि बोथरा ने भिक्षु भक्ति की संयुक्त प्रस्तुति दी। इंदरचंद सेठिया तथा लक्ष्मीपत डूंगरवाल ने भी अपने भजनों की प्रस्तुति दी।

साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मधुरप्रभा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी के मधुर गीतों ने सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने मंच संचालन किया। आगापुरा तेरापंथ परिवार अध्यक्ष लक्ष्मीपत डूंगरवाल ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता प्रकट की तथा सभी गायक कलाकारों तथा श्रद्धालुओं का आभार ज्ञापन किया। साध्वीश्री जी के मंगलपाठ के पश्चात कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आचार्य भिक्षु का २९६वाँ जन्म दिवस

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ भवन में आचार्य भिक्षु के २९६वाँ जन्म दिवस एवं २६४वाँ बोधि दिवस के उपलक्ष्य में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जन्म एक छोटे से गाँव कंटालिया में हुआ पर वे अपनी प्रांजल प्रज्ञा से विख्यात हो गए। उन्होंने अपनी सधी हुई लेखनी से आगमों के आधार पर ३८ हजार पद्य लिखे।

वे एक क्रांतिकारी आचार्य थे। उनका जीवन कष्टों की कहानी है। पहला प्रवास श्मशान की छतरियों में एक पहला चातुर्मास केलवा की अंधेरी औरी में किया। जीवन की प्राथमिक आवश्यकता उनको सुलभ नहीं थी। वस्त्र भोजन एवं आवास आदि पर वे घबराए नहीं। राजनगर में उनको बोधि प्राप्त हुई। गुरु से पृथक् हुए और तेरापंथ का शिलान्यास किया।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि उनके मष्तिष्क में बुद्धि की प्रखरता थी वाणी में सत्य की स्वर लहरी थी। भुजाओं में पुरुषार्थ की झलक थी। जन्मजात उनके हाथ में कुछ विलक्षण निशान थे।

साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने कहा कि वे एक शक्तिशाली आचार्य थे, वे ज्ञान आचार्य, दर्शन आचार और चारित्र से युक्त आचार्य थे। उनका ज्ञान अथाह था। संस्कृत प्राकृत आदि बिना पढ़े आगमों का दोहन करके रत्न निकाले।

रोहिणी सभा के अध्यक्ष मदनलाल जैन, दिल्ली सभा के मंत्री सुरेंद्र नाहटा, महिला मंडल की ओर से सुशीला एवं ज्ञानशाला की ओर से एक छोटी बालिका ने भिक्षु चरणों में अभिवंदना प्रस्तुत की।

तेरापंथी सभा, रोहिणी के महामंत्री राजेश बैंगानी ने संचालन किया।

शपथ ग्रहण समारोह

लिलुआ।

तेयुप, लिलुआ के शपथ ग्रहण समारोह की शुरुआत नवकार महामंत्र उच्चारण के साथ की गई। पंकज नाहटा ने विजय गीत का संगान किया। रंजीत सेठिया ने श्रावक निष्ठा वाचन किया और कहा कि उनके पास अध्यक्ष पद के लिए एक ही नाम आया है, उन्होंने घोषणा की। २०२१-२२ के लिए विकास पुगलिया को तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया।

लिलुआ सभा के ट्रस्टी रंजीत सेठिया ने वर्तमान अध्यक्ष विकास पुगलिया को साफा पहनाकर और दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। नव मनोनीत अध्यक्ष विकास पुगलिया ने अपने भाव रखे और सत्र २०२१-२२ के लिए अपनी टीम की घोषणा की एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। लिलुआ के तेयुप सदस्य, महासभा के कार्यकारिणी सदस्य अनिल जैन, सभा के ट्रस्टी रंजीत सेठिया, बेलूर वाली सभा के अध्यक्ष अरुण नाहटा, लिलुआ सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष चैनरूप छाजेड़, सभा के कार्यकारिणी सदस्य अनिल जैन, शरद लुनिया, प्रदीप लुनिया एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन गौरव घोड़ावत ने किया।

✦ *जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मंत्र दीक्षा के विविध आयोजन

संस्कारोपण का उपक्रम – मंत्र दीक्षा

मंत्र दीक्षा धार्मिक संस्कारों की एलक्वेन्जी०

मदुरै।

तेयुप के तत्त्वावधान में मंत्र दीक्षा का विशेष आयोजन जो छोटे से लेकर बड़े बच्चों में धर्म के प्रारंभिक संस्कारों का जागरण करता है, अगर बच्चों में शुरुआत से ही धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण कर दिया जाए तो उन्हें आगे जाकर अपने जीवन को बुराईयों और भटकावों से बचाया जा सकता है। मंत्र दीक्षा धर्म की एलकेजी है। मदुरै ज्ञानशाला के बच्चों में धर्म की अभिनव जागृति हो और उनका जीवन इस दिशा में निरंतर गतिमान होता रहे।

सहयोगी संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि लेता है बचपन में संस्कार, उसके पचपन तक होते हैं अच्छे विचार, उसके जीवन में रहता है सद्व्यवहार और जीवन में रहता है गुणों का भंडार। बाल संत जयदीप कुमार जी ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक धनराज लोढ़ा, तिरुपुर से पधारे जितेंद्र जैन, तेयुप के मंत्री राजकुमार नाहटा ने ज्ञानशाला पखवाड़ा की जानकारी दी। उपासिका एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सरोज लोढ़ा ने पिछने २ साल में ज्ञानशाला में हुए कार्यों की जानकारी दी। संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सरोज लोढ़ा ने किया।

कार्यक्रम के अंत में तेयुप द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों को पुरस्कार द्वारा प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम में तिरुपुर, त्रिची बाहर गाँव से श्रावक पधारे हुए थे।

बच्चों के धार्मिक विकास में ज्ञानशाला महत्त्वपूर्ण

पेटलावद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप ने मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया। मुनि वर्धमान कुमार जी के सान्निध्य में कार्यक्रम के अंतर्गत कुल ५० बच्चों ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ मंत्र दीक्षा ग्रहण की। मुनि वर्धमान कुमार जी ने कार्यक्रम की शुरुआत गीत के संगान के साथ करते हुए मंत्र दीक्षा को महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया और ज्ञानशाला के बच्चों को देव, गुरु और धर्म के विषय में जानकारी दी। नवकार महामंत्र की महिमा को कहानी के माध्यम से बताया।

तेयुप के अध्यक्ष रूपम पटवा ने बताया कि हम मंत्र दीक्षा के माध्यम से अभातेयुप की ३५० शाखाएँ पूरे देश में प्रतिवर्ष समाज के छोटे-छोटे बच्चों में जैन धर्म, तेरापंथ धर्म आदि आध्यात्मिक संस्कारों के सिंचन का कार्य करती हैं। बच्चों में स्थानीय सभा द्वारा नियुक्त ज्ञानशाला प्रशिक्षक व प्रशिक्षिकाओं के माध्यम से पूरे वर्ष आध्यात्मिक शिक्षण का कार्य किया जाता है।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चे कृतिका भंडारी, एनी पटवा, सभा मंत्री लोकेश भंडारी, महिला मंडल अध्यक्ष मनीषा पटवा, तेयुप अध्यक्ष रूपम पटवा ने विचार व्यक्त किए व ज्ञानशाला के बच्चों ने ज्ञानशाला की उपयोगिता पर संवाद प्रस्तुत किया।

कृति भंडारी को सभाध्यक्ष विनोद भंडारी ने विशेष योग्यता सम्मान से सम्मानित किया तथा ऑन लाइन क्लास लेने वाले बच्चों को सभा मंत्री लोकेश भंडारी ने सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका पुष्पा पालरेचा ने किया व अंत में आभार ज्ञापन महेश भंडारी ने किया।

जीवन निर्माण का पहला सोपान है मंत्र दीक्षा

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया गया। तत्पश्चात ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका बहनों ने मंगलाचरण किया।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में ज्ञानार्थियों द्वारा नमस्कार महामंत्र पर गीत के साथ नृत्य की प्रस्तुति दी गई। ज्ञानशाला द्वारा पाँच पाप पर रोचक संवाद प्रस्तुत किया गया। स्वागत वक्तव्य तेयुप के अध्यक्ष पूरण चपलोत ने किया। साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रारंभ किया गया यह मंत्र दीक्षा का उपक्रम बच्चों के जीवन निर्माण का पहला सोपान है। संस्कारों के बीजारोपण का यह श्रेष्ठ उपक्रम है। साध्वी विद्यावती जी ने कहा कि मंत्र दीक्षा जीवन को उज्ज्वल एवं निर्मल बनाने में सहायक तत्त्व है। साध्वीश्री जी ने लगभग ३० बच्चों को पाँच संकल्प दिलाते हुए मंत्र दीक्षा प्रदान की। मंत्र दीक्षा के संस्कार से संस्कारित होने वाले ज्ञानार्थियों को आयोजकों द्वारा आवश्यक सामग्री प्रदान की गई।

नन्हे बालक सक्षम सिंघवी द्वारा सुंदर गीत की प्रस्तुति देखकर सब भावविभोर हो गए। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री रौनक धाकड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला संयोजिका राज कच्छारा ने किया।

कार्यक्रम में सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकर्तागण की उपस्थिति के साथ-साथ उनका सराहनीय सहयोग रहा।

ध्यान-जप से मंत्र दीक्षा का आयोजन

भुज (कच्छ)।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। अभातेयुप द्वारा निर्देशित कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की गई। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका अमिता मेहता, श्वेता दोशी एवं लता शाह ने सहयोग प्रदान किया। अमिता मेहता ने बच्चों को जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान की। उपासक नरेंद्र मेहता ने संपूर्ण कार्यक्रम को विशिष्ट रूप से अपने प्रेरक अभिभाषण एवं ध्यान-जप के माध्यम से बच्चों को मंत्र दीक्षा के संकल्प ग्रहण करवाए।

सभाध्यक्ष हसमुखलाल मेहता, मंत्री धनसुखलाल कुबड़िया, तेयुप आशीष बाबरिया ने स्वागत एंव अपने विचार व्यक्त किए। लगभग ४१ बच्चों की उपस्थिति रही। मंत्री महेश गांधी ने आभार ज्ञापित किया। उपाध्यक्ष जिग्नेश दोशी, सहमंत्री भावित मेहता, कोषाध्यक्ष हेतन बाबरिया, अभातेयुप समिति सदस्य एवं संगठन मंत्री आदर्श संघवी, कार्यसमिति सदस्य जिगर बाबरिया, मितुल मेहता आदि का मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम में अमूल्य सहयोग रहा।

मंत्र दीक्षा का आयोजन

पर्वत पाटिया।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा डॉ० समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत समणी मानसप्रज्ञा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई।

समणी जी ने नमस्कार महामंत्र का महत्त्व अमरकुमार की कहानी के माध्यम से समझाया। उपस्थित ६८ बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की।

तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, ज्ञानशाला प्रायोजक ज्ञान कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन निवर्तमान अध्यक्ष कांतिलाल सिंघवी ने किया। कार्यक्रम में तेयुप पदाधिकारी एवं महिला मंडल की भी उपस्थिति रही। संचालन कुसुम बोथरा ने किया। कार्यक्रम की सफलता में रवि मालू, प्रवीण ओस्तवाल, हरीश बाफना, यश सिंघवी एवं प्रशिक्षिका बहनों का श्रम रहा।

आदमी को ज्ञान प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १२ अगस्त, २०२१

शांतिदूत महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। आदमी को जितना संभव हो, समय आदि की अनुकूलता हो, परिस्थितियों की भी अनुकूलता हो तो ज्ञान-विकास का प्रयास करना चाहिए।

शास्त्रकार ने यहाँ बताया है–नैपुणिक वस्तु (पुरुष) नौ है। निपुण का मतलब है, सूक्ष्म ज्ञान। ज्ञान सतही भी होता है, उसका अपना महत्त्व है। पर ज्ञान की गहराई में जो जाता है, ज्ञान की सूक्ष्म स्थिति का साक्षात्कार करता है, उसका अलग महत्त्व होता है।

जिस किसी विषय का भी आदमी अध्ययन करता है, उसकी गहराई में पैठने का प्रयास हो, फिर जो कुछ मिलता है, वह विशेष हो सकता है। ज्ञान का विकास करने के लिए आदमी में ज्ञान के प्रति समर्पण का भाव आना चाहिए। ज्ञान के प्रति निष्ठा हो, समर्पण हो, आकर्षण हो यह स्थिति मन की बननी चाहिए।

दूसरी बात है–ज्ञान प्राप्ति का प्रयास-पुरुषार्थ करना चाहिए। ज्ञान के लिए समय का भी नियोजन कर सके। तीसरी बात है कि ज्ञान और ज्ञानदाता है, उसके प्रति सम्मान विनय का भाव हो। ज्ञान, ज्ञानी व्यक्ति और ज्ञानदाता के प्रति सम्मान का भाव हो। ये तीनों बातें जीवन में आ जाती हैं, तो व्यक्ति कुछ ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ सकता है। प्रतिभा प्रखर है, तो और बड़ा सहयोग उसके मिल जाता है। आदमी ज्ञान की ऊँची अवस्था को, वैदुष्य की शिखर अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

यहाँ शास्त्रकार ने नैपुणिक शब्द को काम में लिया है। निपुण यानी सूक्ष्म ज्ञान। जिसके पास सूक्ष्म ज्ञान होता है, जो सूक्ष्म ज्ञान का धनी होता है, वह व्यक्ति नैपुणिक कहलाता है। यहाँ अलग-अलग विषयों के ज्ञाता, नौ पुरुष बताए गए हैं।

ये सूक्ष्म ज्ञान के धारक व्यक्ति हैं–प्रथम हैं–संख्यान-गणित को जानने वाला। ज्ञान रूपी वृक्ष की अनेक शाखाएँ हैं। कोई व्यक्ति गणित का अच्छा ज्ञान रखने वाला। दूसरा–नैमित्तिक-निमित्त को जानने वाला। विनय के साथ चित्त की एकाग्रता हो। चंचलता ज्यादा न हो। यह एक प्रसंग से समझाया कि मेघ समान रूप से बरसता है, भाजन कैसा है, उसका फर्क है।

तीसरा–कायिक-इडा, पिंगला आदि प्राण-तत्त्वों का ज्ञान रखने वाला। चौथा पौराणिक-इतिहास को जानने वाला। पाँचवाँ–पारिहस्तिक, प्रकृति से ही समस्त कार्यों में दक्ष। छठा-परपंडित-अनेक शास्त्रों को जानने वाला। सातवाँ-वादी-वाद-लब्धि से संपन्न। आठवाँ-भूमिकर्म-भस्म लेप या डोरा बाँधकर ज्वर आदि की चिकित्सा करने वाला। नौवाँ-चैकित्सिक-चिकित्सा करने वाला।

ज्ञान के अनेक क्षेत्र हैं, ज्ञान में आगे बढ़ना है तो हम में ज्ञान के प्रति समर्पण, रुझान-रुचि हो और उसके लिए समय निकाल सकें और वैसा पुरुषार्थ कर सकें। ज्ञान, ज्ञानी और ज्ञानदाता के प्रति सम्मान का भाव हो। विनय भाव हो, सत्य में बुद्धि-प्रज्ञा का ठीक संयोग हो तो आदमी नैपुणिक-सूक्ष्म ज्ञान वाला बन सकता है।

ज्ञान और ज्ञानी की आशातना नहीं, बुद्धि की आशातना नहीं करनी चाहिए। बुद्धि विकास का भाव रखो। बुद्धि अपने आपमें खराब नहीं है, बुद्धिमान आदमी खराब हो सकता है। बुद्धि का दुरुपयोग हो सकता है। बुद्धि का सम्मान करें। ज्ञान के क्षेत्र में आयास-प्रयास करें तो कुछ व्यक्ति नैपुणिक बन सकते हैं। सूक्ष्म विषय के विज्ञाता बन सकते हैं।

पूज्यप्रवर ने माणक महिमा का विवेचन करते हुए फरमाया कि माणक युग में ७१ संत और १६३ साध्वियाँ हैं। श्रावक-श्राविकाएँ अनेक हैं। उनके शासन में सांतरा संत कालूजी स्वामी जैसे हैं। उनको बख्शीष माणकगणी करवाते हैं। मुनि कालूजी सर्जन डॉक्टर जैसे थे। जयाचार्य की आँख का मोतिया का ऑपरेशन किया था। संघ सेवा में जीवन का योगदान दिया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। बड़ी तपस्या करने वालों को प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर ने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने साधना के बाधक तत्त्वों के बारे में बताया। साध्वीवर्याजी ने कहा कि कोई आत्मा हीन नहीं है, पर व्यवहार में हीनता में भेद है। योग्यता कम-अधिक हो सकती है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में व्यवस्था समिति उपाध्यक्ष संजय मांडोत, महावीर लोढ़ा, व्यवस्था प्रभारी, अशोक बाफणा, बाबूलाल पितलिया, प्रेक्षा झाबक, वनिता संजय भानावत ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शुभ योग से निर्जरा के साथ पुण्य...

(पृष्ठ १२ का शेष)

इस अवसर पर पूज्यप्रवर ने फरमाया कि सरदारशहर में हमारा जो सन् २०२२ प्रवास निर्धारित हुआ है। उस प्रवास के दौरान ये पाँच कार्यक्रम समायोज्य हैं। पाँचों ही कार्यक्रम वैशाख महीने में ही आ रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी का स्मृति दिवस, अक्षय तृतीया, मेरे जीवन से संबंधित जन्म दिवस वो भी षष्ठीपूर्ति, फिर यह दायित्व ग्रहण का दिन, दीक्षा का ४८वाँ वर्ष संपन्न होने का समय। यह पंचामृत २०२२ । यह अमृत है, ऐसा अमृत पुष्ट होता रहे। जो परम सुखों की ओर ले जाने वाला हो। सरदारशहर के लोग खूब अच्छे ढंग से खूब नैतिकता, अहिंसा, सौहार्द भाव, खूब त्याग संयम की भावना रहे। हमारा जो संभावित प्रवास है, उसका उत्साह के लाभ उठाने का और औरों को लाभ देने का समुचित प्रयास करते रहें।

सरदारशहर पुराना क्षेत्र है। पूर्वाचार्यों का भी मानो बड़ा कृपा भाव रहा है। जो मघवागणी, माणकगणी, आचार्य महाप्रज्ञ जी व मेरे से जुड़ा हुआ है, ऐसा सरदारशहर है। लोगों में खूब अच्छी भावना, अच्छा माहौल रहे। विमल सामसुखा ने अपनी प्रस्तुति दी। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान और ज्ञानी के प्रति विनयभाव रखना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ७ अगस्त, २०२१

महान साधक, उदात्त चेतना के धनी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा देते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के नौवें स्थान में २३वें सूत्र में कहा गया है कि दो ही चीजें हैं–आत्मा और शरीर। इनके सिवाय और कुछ नहीं। जो हैं, वे इन्हीं का मोटा-मोटी विस्तार माना जा सकता है।

जीव हमारे लिए अदृश्य है, परंतु ज्ञेय हो सकता है। ज्ञेय को जानने का प्रयास भी किया जा सकता है।

ज्ञान के विकास का आदमी प्रयास कर सकता है। ज्ञान के लिए प्रतिभा का होना और बाह्य अनुकूल परिस्थितियों का होना आवश्यक है। जिस विषय के ज्ञान में रुचि है, उन ग्रंथों को पढ़ना चाहिए। उस विषय का जानकर ज्ञानदाता भी होना चाहिए। ज्ञान देना भी एक उपकार है। दूसरों को ज्ञान देने का प्रयास करना चाहिए। समय का उपयोग करो

यह चतुर्मास दुर्लभ चतुर्मास है। कितने ठाणों का समवाय यहाँ हुआ है। अनेक विषयों के विज्ञाता साधु-साध्वियाँ मिल सकते हैं। उनके पास ज्ञान है, उसे दूसरों को बताने का प्रयास करें। इसका मुनि हेमराज जी और जीत मुनि उदाहरण बन सकते हैं। जितना मौका मिले ज्ञान ग्रहण का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान और ज्ञानी की आशातना नहीं करनी चाहिए। ज्ञानी के प्रति विनय भाव रखो।

ज्ञान को देने से ज्ञान और बढ़ सकता है, पुष्ट हो सकता है। ज्ञानदान और ज्ञान का आदान अच्छा कार्य होता है। जितनी अनुकूलता हो ज्ञान ग्रहण में और ज्ञान देने में प्रवृत्त होने का प्रयास करना चाहिए। हमारे जीवन में ज्ञान का महत्त्व है। इधर शरीर है और इधर आत्मा।

आत्मा का ज्ञान कह दे या अध्यात्म विद्या का ज्ञान कह दें, एक ही है। हमारे पास कितने ग्रंथ हैं, जिनसे ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। आदमी मनन भी करे। ज्ञान के प्रति हमारा जितना समर्पण का भाव होगा तो ज्ञान भी ज्यादा हमारे भीतर में फैल सकेगा और स्पष्ट हो सकेगा। अवस्था में जो छोटे हैं, वो इस ओर विशेष ध्यान दें। स्वयं के पास ज्ञान है, तो अच्छा काम हो सकता है।

तत्त्व ज्ञान और इतिहास की दृष्टि से ज्ञान का अध्ययन किया जा सकता है। संस्कृत-व्याकरण, हिंदी-अंग्रेजी का भी अच्छा ज्ञान हो। प्रारंभिक समय है, उसमें ज्ञान बढ़ाना चाहिए। जैविभा से कितने कोर्स चलते हैं। ज्ञान से बौद्धिकता, तार्किकता आदि योग्यताएँ बढ़ सकती हैं। ज्ञान से आदमी की चिंतन की क्षमता बढ़ जाती है। अध्यात्म की दृष्टि से चेतना जागरूक बन जाती है।

हम आत्मा और अध्यात्म के बारे में जानने का प्रयास कर सकते हैं। शरीर को भी भाड़ा चाहिए, इसलिए भोजन लेना होता है। भोजन में विवेक की बात वह शास्त्रकार ने बताई है कि खाना भी अपेक्षित है। पर ज्यों-ज्यों उम्र बढ़े भोजन में संयम करना चाहिए। ये साधना और स्वास्थ्य दोनों की दृष्टि से ठीक है।

तपस्या भी आत्मा के लिए ठीक है और शरीर के लिए भी ठीक है, विषय का सेवन और वर्जन इन दोनों का विवेक के साथ उपयोग होता रहे तो वह स्वास्थ्य और साधना की दृष्टि से अनुकूलता की बात हो सकती है।

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के उपलक्ष्य में मर्यादावली का वाचन किया। आचार साधु की बहुत बड़ी संपत्ति है। जिसमें एक नंबर धनवान का धन भी इसके सामने फीका है। आचार-संपदा हमारी सुरक्षित रहे और इसे और ज्यादा बढ़ाने का प्रयास करें। मूल के साथ ब्याज भी बढ़ता रहे। जितना शुभ योग में रहेंगे वह ब्याज है। तेरह नियम हमारी एफ०डी० है, मूल है। दोष लगे तो प्रायश्चित लेकर इसका निर्वहन कर लें। चारित्र निर्मल रहे।

प्रतिलेखन भी हमारी अहिंसा का एक तत्त्व है। लेते व रखते समय पूरा ध्यान रखो। ईर्या समिति का ध्यान रखो। चलते समय साधु बात न करे। सिद्धांत और व्यवस्थाओं को समझाया। मर्यादाओं को विस्तार से समझाया। नव दीक्षित साध्वियों ने लेख पत्र का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने २१-२१ कल्याणक बख्शीष करवाए।

शासनश्री साध्वी गुणश्री जी की स्मृति सभा

पूज्यप्रवर ने साध्वीश्री जी का संक्षिप्त परिचय बताया। साध्वी गुणश्री जी गुरुदेव तुलसी के हाथों हिसार में दीक्षित हुई थी। उन्होंने सेवाएँ भी की हैं। ५ अगस्त को मध्याह्न बीदासर में कालधर्म को प्राप्त हो गई। हम उनकी आत्मा के प्रति मध्यस्थ भावना से मंगलभावना करते हैं, उनकी आत्मा मोक्ष की ओर अग्रसर हो। उनकी स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने भी साध्वी गुणश्री जी के बारे में कहा कि वे साधु-साध्वियाँ धन्य होते हैं जो बढ़ते-चढ़ते परिणामों के साथ संयम स्वीकार करते हैं और संयम की आराधना करते हुए, जागरूक अवस्था में वर्धमान परिणामों के साथ अपनी संयम-यात्रा संपन्न कर लेते हैं।

मुख्य मुनिप्रवर ने साध्वी गुणश्री जी के बारे में बताते हुए कहा कि संघ साधक के लिए शरण है। उसकी साधना का आधार है। साध्वी गुणश्री जी १७ वर्ष की अवस्था में ही धर्मसंघ में दीक्षित हो गई। उनमें लिपि कला का विशेष विकास था। मैं उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त करता हूँ।

साध्वी शुभप्रभा जी ने बताया कि साध्वी गुणश्री जी हमारे गण की गौरव थी। शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी ने बताया कि समाधी केंद्र में लंबे काल तक रहने वाली साध्वी थी। साध्वी कार्तिकयशा जी द्वारा आए संवाद का वाचन किया। साध्वी संवरयशा जी ने बताया कि उन्होंने मुझे संयम मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि साध्वी गुणश्री जी की उनकी आत्मा मंजिल पहुँचने तक विकासशील बनी रहे और शीघ्र मंजिल का वरण करे, मंगलकामना। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने मनुष्यों के भेदों के बारे में विस्तार से समझाया। जीवों के भेद-प्रभेदों के बारे में समझाया।

साध्वी सुषमाश्री जी ने ३ सितंबर से शुरू होने वाले नवरंगी तप जो जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मानवता को समर्पित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व डेंटल केयर का उद्घाटन

डोंबिवली।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, डोंबिवली द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व डेंटल केयर का भव्य उद्घाटन साध्वी संयमलता जी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में हुआ। कार्यालय का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ।

इस अवसर पर साध्वी संयमलता जी ने कवि की वह चार पंक्तियाँ सुनाते हुए कहा कि जिस देश का बच्चा हो संस्कारी, युवा हो क्रांतिकारी और बुढ़ापा हो अनुभव से भरा। वह देश अपने आपमें निखरा। हम यहाँ आए तो उससे पहले इस क्षेत्र के बारे में सिर्फ सुना था और आने के बाद अनुभव भी किया। तो यह पंक्तियाँ इस क्षेत्र के लिए सही दर्शाती हैं।

साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने युवा पीढ़ी को भटकने से बचाने और संस्कारी बनाने के लिए तेरापंथ युवक परिषद का गठन किया। उन्हें आध्यात्मिक और सामाजिक उपक्रम भी दिए। जिससे यह युवा समाज, राष्ट्र और विश्व को कुछ दे सकें। राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि तेरापंथ समाज, डोंबिवली के कार्यों को पूरे भारतभर में सराहा जा सकता है। तेयुप, डोंबिवली की नवीनतम सोच अन्य परिषदों को देखने की जरूरत है। डोंबिवली परिषद के कार्यों को शब्दों या माला में पिरोना हो तो कम पड़ता है। इनका मूल्यांकन असंभव-सा लगता है। डोंबिवली की पहचान परिषद या अन्य संस्था से न होते हुए इसकी पहचान यहाँ के श्रावकों के आपसी समन्वय और सौहार्द से होती है। कोई भी संस्था का कार्यक्रम हो, तो यहाँ के श्रावक अपने धर्मसंघ का समझकर इसमें बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं।

विशेष अतिथि विधायक रवींद्र चव्हाण ने कहा कि जन्मभूमि सबकी अलग होगी, परंतु आपकी कर्मभूमि में आप लोगों ने आरोग्य के लिए जो उपक्रम शुरू किया उसका डोंबिवली को जरूर फायदा मिलेगा। जैन संस्कार विधि से संस्कारक विनोद सिंघवी ने शुभारंभ करवाया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपत हिंगड़ ने स्वागत भाषण दिया। तेयुप अध्यक्ष सुरेश बैद द्वारा सभी पदाधिकारीगण का स्वागत करते हुए तेयुप द्वारा किए जाने वाले सभी आयामों से अवगत कराया। महिला मंडल संयोजिका किरण कोठारी, अभातेयुप उपाध्यक्ष अमित नाहटा एवं महेश बाफना, महामंत्री मनीष दफ्तरी, सहमंत्री अनंत वागरेचा, संगठन मंत्री जयेश मेहता, प्रभारी नरेश चपलोत, प्रबुद्ध विचारक जगदीश परमार, तेयुप मंत्री विकास कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए।

एटीडीसी में रूम के नए अनुदानदाता धर्मचंद, पारस, अशोक, महावीर बड़ाला एवं शांतिलाल, ओमप्रकाश, कांतिलाल, संजय कोठारी का और कंचनदेवी, जितेंद्र, रौनक बाफना का सम्मान मोमेंटों से अभातेयुप परिवार एवं पदाधिकारीगण द्वारा किया गया। ज्ञात रहे कि इस एटीडीसी हेतु जगदीश भैरूलाल परमार एवं प्रकाश किशनलाल कच्छारा परिवार का सहयोग अनुमोदनीय है। अहिंसा समवाय मंच के अध्यक्ष सोहनलाल सिंघवी, एटीडीसी संयोजक ललित पुनमिया के साथ एटीडीसी के अनुदानदाता उपस्थित थे। दिलीप बड़ाला, जीवन सिंघवी, भरत कोठारी, राकेश कोठारी, दिनेश श्रीश्रीमाल, भरत कच्छारा, नरेंद्र गुंदेचा, प्रकाश सोनी, राहुल कोठारी, चयन सियाल, यश कोठारी, नीता ओस्तवाल, एटीडीसी की टीम आदि के अलावा संपूर्ण सभा, तेयुप संपूर्ण ट्रस्टीगण, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल की उपस्थिति के साथ सभी का सहयोग रहा।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप अध्यक्ष सुरेश बैद व संयोजक ललित पुनमिया ने किया। आभार ज्ञापन दीपक बाफना ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
23 - 29 अगस्त, 2021

✦ जो आदमी समता को साध लेता है, वह सुखी रह सकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

दो दिवसीय बारह व्रत कार्यशाला का शुभारंभ

शुभ योग से निर्जरा के साथ पुण्य का बंध स्वतः ही हो जाता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ६ अगस्त, २०२१

मन मंदिर के देवता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के नौवें अध्याय के २५वें अध्ययन में बताया गया है—जैन दर्शन में कर्मवाद का सिद्धांत है। आठ कर्म बताए गए हैं। पच्चीस बोल में दसवाँ बोल है—कर्म आठ।

इन आठ कर्मों में चार कर्म तो एकांततया पाप रूप में ही होते हैं—ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय। इन्हें घाती कर्म भी कहा जाता है। शेष चार कर्म अघाती कर्म कहलाते हैं—वेदनीय, नाम, गौत्र, आयुष्य। इनमें से प्रत्येक कर्म पाप रूप भी होता है, तो पुण्य रूप भी होता है। जैसे वेदनीय कर्म के दो भेद हैं—सातवेदनीय और असातवेदनीय। सातवेदनीय पुण्य रूप है, असातवेदनीय पाप रूप है।

शुभ आयुष्य पुण्य रूप में है, अशुभ आयुष्य पाप रूप में है। ऐसे ही नाम कर्म में शुभ नाम कर्म और अशुभ नाम कर्म। गौत्र कर्म में भी उच्च गौत्र पुण्य रूप में और नीच गौत्र पाप रूप में होता है। आठ कर्म में पचहत्तर प्रतिशत तो पाप के खाते में आते हैं। पच्चीस प्रतिशत पुण्य के खाते में आते हैं। पुण्य कर्म का भी बंध होता है।

शास्त्रकार ने पुण्य के नौ प्रकार बताए हैं—अन्न पुण्य, जिस साधु को कोई दान देता है। दान देने में चित्त, वित्त, पात्र तीनों शुद्ध हो। दान देने वाला, देय वस्तु और दान लेना भी शुद्ध हो। तो आध्यात्मिक संदर्भ में वह विशुद्ध कोटि का दान हो जाता है। शुद्ध दान देना पुण्य बंध का कारण बन जाता है।

इसी तरह पान यानी पानी, वस्त्र, मकान, शैय्या-संस्तारक का दान देता है, तो पुण्य का बंध हो जाता है और फिर मन, वचन, पुण्य जैसे गुणी आदमी को देखा तो मन में प्रसन्नता का भाव आता है कि साधक आदमी है। वाणी से गुणगान करता है। शरीर से कोई अच्छा धार्मिक कार्य करे, काया का शुभ योग है।

एक प्रश्न उठता है कि निर्जरा और पुण्य दोनों का संबंध बताया गया है। दोनों का आधार शुभ योग है। एक मूल की दो शाखाएँ हैं। दो कार्य होते हैं। कारण तो हो गया शुभ योग। शुभ योग से पुण्य का बंध और निर्जरा का कार्य हो रहा है। पहले पुण्य फिर निर्जरा होती है। दोनों का कार्य प्रारंभ तो एक साथ हो जाता है, संपन्नता में फर्क पड़ता है, पुण्य पहले, निर्जरा बाद में संपन्न होती है।

एक सिद्धांत यह रहा है कि निर्जरा के बिना पुण्य का बंध नहीं हो सकता। तेरापंथ की मान्यता है, स्वतंत्र पुण्य का बंध नहीं होता है। निर्जरा के साथ ही होता है। अन्य मान्यता में पूज्य का स्वतंत्र बंध माना है।

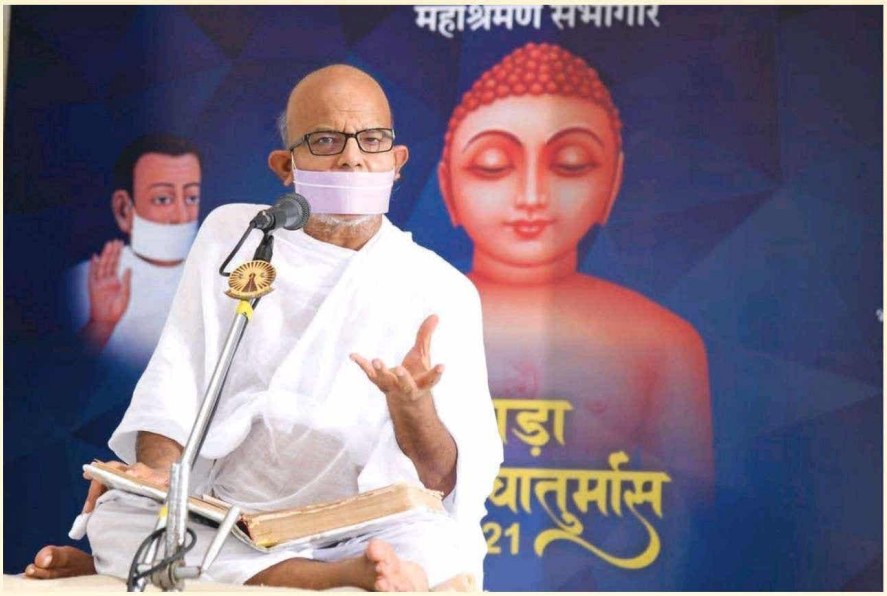

एक प्रश्न है कि कोई आदमी कहता है, मुझे निर्जरा-निर्जरा चाहिए, पुण्य नहीं। उसे क्या करना चाहिए? पुण्य कम हो निर्जरा ज्यादा हो। ऐसा भी सिद्धांत है, क्या? अमुक कार्य में पुण्य की प्रधानता रहेगी, निर्जरा गौण रहेगी। तीसरा प्रश्न है कि ऐसा कोई सिद्धांत है क्या कि ज्यों-ज्यों साधना आगे बढ़ेगी निर्जरा, निर्जरा ज्यादा होती जाएगी, पुण्य बंध कम होगा। ऐसा किसी ग्रंथ में आया है, क्या?

शुभ योग आश्रव है, उससे पुण्य का बंध होता है, पर जो कर्म कटते हैं, वो शुभ योग आश्रव नहीं है, शुभ योग निर्जरा है। कारण तो एक है, कार्य दो होते हैं। कार्य की अपेक्षा से शुभ योग के दो भेद हो गए। कौन सा हेतु बनता है, जिससे शुभ योग आश्रव का कार्य कर देता है और कौन सा कारण होता है, जिससे शुभ योग निर्जरा हो जाती है।

मोहनीय कर्म का क्षयोपशम तो निर्जरा का हेतु बनता है। तेरापंथ दर्शन की मान्यता और अन्य आम्नाय की मान्यता में इस सूत्र की व्याख्या में अंतर है। किसको दान देने से पुण्य का बंध है, किसको दान देने से पुण्य का बंध नहीं है, यह विमेतक्य की बात हो जाती है। तेरापंथ की उत्पत्ति में नई मान्यता उत्पत्ति हुई है।

खेती तो अनाज के लिए होती है, भूसी तो साथ में आ जाती है। हम शुभ योग करें तो निर्जरा के लिए करें, साथ में पुण्य का बंध भी हो जाता है। कभी पुण्य की आकांक्षा मन में आ जाती है, वो साधना के लिए, साधक के लिए बढ़िया नहीं। पुण्य की वांछा करना साधना के क्षेत्र में गलत है।

कोई निदान कर लें कि इस तपस्या का मुझे फल मिले कि मैं अगले जन्म में चक्रवर्ती राजा बन जाऊँ, तो वह साधक अगर प्रायश्चित नहीं करता है, तो मानना चाहिए कि छोटी चीज के लिए बड़ी चीज को बेच दिया। मल्लीनाथ स्वामी के विषय में बात है कि जिसने तीर्थंकर नाम कर्म का बंधन कर लिया, वह मनुष्य ही बनेगा। तो क्या मल्लीनाथ ने पिछले तीसरे भव में तीर्थंकर नाम गौत्र का बंध कर लिया था? जाति-गति का बंधन कर लिया था क्या?

पुण्य का बंध होता है, पुण्य का उदय होता है, तो धातव्य बात है कि पुण्य है, वो पाप का निमित्त न बन जाए, चाहे गृहस्थ हो या चारित्रात्माएँ। अनुकूलताएँ हैं, तो साधना का और लाभ उठाएँ। इसलिए किसी ने कह दिया कि मुझे पुण्य नहीं चाहिए। पुण्य भावी पाप का कारण बन सकता है। हम यह ध्यान रखें कि हमारा पुण्य भावी पाप का निमित्त न बन जाए।

माणक चारित्र का विवेचन करते हुए पुज्यप्रवर ने युवाचार्य निर्धारण एवं माणकगणी के अंतिम समय के बारे में फरमाया।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में दो दिवसीय बारह व्रत कार्यशाला के शुभारंभ पर पूज्यप्रवर ने फरमाया कि श्रावक के बारह व्रत एक त्याग संयम की चेतना जगाने का एक प्रयोग है। त्याग होने से श्रावक भी रत्नों की माला की कोटि में आ जाता है।

बारह व्रत में एक विशेषता यह है कि इसमें विरति तो है ही, आचरणात्मक धर्म भी आ गया तो किसी रूप में उपासनात्मक धर्म भी आ गया। प्रथम आठ व्रतों में तो छोड़ना है। नौवें में समय निकालना पड़ेगा, दसवें, ग्यारहवें में भी समय निकालना पड़ेगा। आठवाँ दान का प्रकार है। ये चार एक प्रकार के हैं। यूँ बारह व्रतों में समवाय हो गया। बारह व्रत हैं, उनको अच्छी तरह समझकर ग्रहण किया जाए। ग्रहण करके उनके पालन के प्रति भी जागरूक रहे। इससे श्रावक को एक अच्छा आध्यात्मिक लाभ मिल सकता है।

बढ़िया बात है कि युवकों में इसकी क्रियान्विति हो रही है। युवक खुद भी धारण करे और औरों का भी प्रयास करे। यह कार्यशाला सफल हो। लोगों में त्याग की चेतना बढ़े, श्रावकत्व में निखार आए यह काम्य है। पूज्यप्रवर ने सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवाई। पुज्यप्रवर ने बारह व्रत श्रावकों को स्वीकार करवाए। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि सबसे दुर्लभ है, पाँचों इंद्रियों की प्राप्ति, इंद्रियों की पूर्ण रचना होना, पूर्ण पर्याप्तियों का विकास होना और अंग, विकलता से रहित होना। ये चारों बातें होना दुर्लभ हैं।

अभातेयुप से अभिषेक पोखरना ने बारह व्रत कार्यशाला के बारे में जानकारी दी। पूरे भारत में कार्यशाला चलाई जा रही है। तेयुप, भीलवाड़ा अध्यक्ष संदीप चोरड़िया ने भी कार्यशाला की महत्ता के बारे में बताया।

आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास समिति एवं जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सरदारशहर ने पंचामृत सरदारशहर-२०२२ लोगो का अनावरण पूज्यप्रवर के समक्ष किया। अध्यक्ष बाबूलाल बोथरा ने अपनी भावना रखी। समूह गीत का सुमधुर संगान हुआ। (शेष पृष्ठ १० पर)

शासनश्री साध्वी गुणश्री जी का देवलोकगमन

बीदासर।

शासनश्री साध्वी गुणश्री जी का जन्म लाडनूं के चौरड़िया परिवार में विक्रम संवत् १९६० बसंत पंचमी के दिन हुआ। आपके संसारपक्षीय माता का नाम मोहनां देवी एवं पिता का नाम माणकचंद था। संसारपक्षीय दादीजी एवं साध्वी संतोंकाजी की प्रेरणा से हृदय में वैराग्य का बीज अंकुर हुआ एवं विक्रम संवत् २००५ को पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश लिया। आपकी दीक्षा १७ वर्ष की आयु में हिसार में विक्रम संवत् २००७ पौष शुक्ला सप्तमी को आचार्य तुलसी के करकमलों द्वारा हुई। दीक्षा लेने के पश्चात साध्वी मोहनांजी, साध्वी राजांजी, साध्वी किस्तुरांजी के सान्निध्य में आंतरिक एवं बाह्य विकास किया। इसके साथ ही लिपि कला के क्षेत्र में भी आप कार्यकुशल थी। पात्रियाँ, प्याले, टॉपसी पर जाल आदि किए। सुंदर अक्षर आपकी पहचान थी। साध्वी गुणश्री जी न केवल कला के क्षेत्र में बल्कि सेवा के क्षेत्र में भी हमेशा आगे रहे। अपने जीवन में साध्वी मोहनांजी-डीडवाना, साध्वी चुनांजी-डीडवाना, साध्वी राजांजी-गंगाशहर, साध्वी किस्तुरांजी-सरदारशहर, साध्वी सुगनांजी-गंगाशहर की पूर्ण मनोयोग से सेवा की। कंठस्थ ज्ञान के क्षेत्र में दसवेंकालिक सूत्र, आवश्यक सूत्र, कालू कौमुदी, जैन सिद्धांत दीपिका, सिंदूर प्रकरम, शांत सुधारस भावना, भक्तामर स्त्रोत, कर्तव्य षटत्रिंशिका, कल्याण मंदिर, अष्टकम, आलंबन सूत्र, अग्निपरीक्षा, मदन मिलन, करमचंद केसर आदि व्याख्यान एवं गीतिका कंठस्थ किए।

आप विक्रम संवत् २०४७ से २०७८ तक लगभग ३५ वर्षों से बीदासर समाधि केंद्र में स्थिर वास में रही। आपमें सहजता, सरलता, स्वावलंबिता, प्रमोद भावना बेजोड़ थी। सन् २०१५ में असाध्य रोग से ग्रसित होने के बाद भी प्रसन्नता और समता भाव धारण किए हुए रही। आपको सन् २०१७ में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'शासनश्री' अलंकरण प्रदान किया। बीदासर समाधि केंद्र में जीवन के अंतिम समय में हृदय रोग से ग्रसित होने के पश्चात जागरूकतापूर्वक सभी से खमतखामणा कर सागारी त्याग-प्रत्याख्यान कर ५ अगस्त, २०२१ को मध्याह्न में देवलोक गमन किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**